Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 10 ❑ अक्टूबर, 2020 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

स्वस्थ पशु प्रबंधन से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

गायों में कृत्रिम गर्भधारण

कीटॉसिस/ऐसीटोनीमियां कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव

ब्रायलर मुर्गी पालन

मकोय (सोलेनम नाइग्रम)

AYURVET™

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET™

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 10 | अक्टूबर, 2020 | दिल्ली

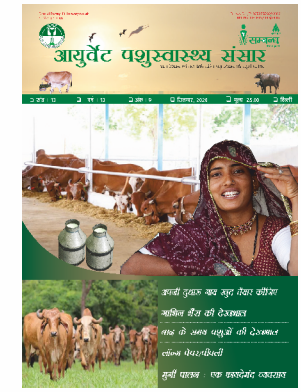

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:

आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:

अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय, रंजन कुमार राकेश, डॉ. आशीष मुद्गल एवं डॉ. तन्मय सिंह

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- स्वस्थ पशु प्रबंधन से, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन 5
- हिमाचल की गौरी को राष्ट्रीय पहचान 9
- डेरी व्यवसाय की सफलता हेतु व्यावहारिक जानकारी 12
- औषधीय पौधों की खेती ने किया मालामाल 25 से ज्यादा जड़ी-बूटियाँ उगा रहा यह किसान 15
- देश में पहली बार शुरू होने वाली है गधी के दूध की डेरी, ₹7000 लीटर भाव 19
- किसानों को सोलर प्लांट और बायोगैस के लिए आसानी से कर्ज मिले-आरबीआई ने बदले नियम 21
- नया अंडा : दिलोदिमाग को रखेगा दुरुस्त कमाई भी होगी डबल 22
- मधुमक्खी पालन को बनाया कमाई का जरिया करते हैं 200 से 250 कुंतल शहद का उत्पादन 23
- गायों में कृत्रिम गर्भधारण 25
- पशुओं में विषाक्तता (जहर) का इलाज 27
- पशु के प्रसव (ब्याने) की प्रक्रिया 31
- कीटॉसिस/ऐसीटोनीमियां-कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव 35
- ब्रायलर मुर्गी पालन 41
- मकोय (सोलेनम नाइग्रम) 45

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 38
- खोज खबर 29
- महत्वपूर्ण दिवस 40

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हमारा देश कृषि प्रधान देश है और किसान हमेशा से ही अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहा है। देश की खाद्य सुरक्षा में उसकी अहम् भूमिका है। सामान्यतः देखा गया है कि किसान को उसकी उपज के सही दाम नहीं मिल पाते और उपज को सीमित दायरे में ही बेचने को मजबूर रहता है। ऐसे में संसद ने इसी माह दो विधेयक पारित कर दिए। कृषि उपज व्यापार एवं वाणिज्य (संवर्धन एवं सरलीकरण) विधेयक, 2020 और कृषक (सशक्तिकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक, 2020। इन विधेयकों में किसानों की सम्पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। यद्यपि कुछ संगठनों एवं विशेषज्ञों का मानना है कि ये विधेयक किसानों को कॉरपोरेट का गुलाम बना देंगे।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2020-21 के लिए रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाने का निर्णय लिया है। एमएसपी में 50-300 रुपए प्रति क्विंटल तक की वृद्धि की गई है। दलहनों व तिलहनों की एमएसपी इनके गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए बढ़ाई गई है, ताकि खाद्य तेलों व दलहनों के आयात पर निर्भरता को कम कर आत्मनिर्भर भारत को प्रोत्साहित दिया जा सके।

कृषि व पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। कृषि के साथ पशुपालन करके किसान अपनी आय को बढ़ा सकता है। दूसरे क्षेत्रों की तरह ही पशुपालन में भी डिजिटलाइजेशन को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री ने ई-गोपाल मोबाइल एप लॉन्च किया है। इससे किसान को अपने पशुओं द्वारा आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी। रोगमुक्त जर्मप्लाज्म, गुणवत्तायुक्त प्रजनन सेवा, पशु पोषण, उपयुक्त दवा प्रयोग से पशु उपचार, टीकाकरण, पशु गर्भावस्था, विभिन्न सरकारी योजनाओं व अभियानों के बारे में ऐप सूचित करेगा। इससे पता चलता है कि सरकार का पूरा फोकस कृषि और पशुपालन पर है और किसान कृषि और पशुपालन करके अपनी आमदनी को बढ़ा सकता है।

नवीन अंक आपके हाथों में है। इस अंक में हमने महत्वपूर्ण विषयों पर आलेख दिए हैं। हमें पूरा विश्वास है कि पहले अंकों की तरह ही यह अंक भी आपके लिए उपयोगी साबित होगा। आप अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं एवं प्रस्ताव हम तक अवश्य पहुंचाएं, ताकि उसे भी आगामी अंक में स्थान दिया जा सके।

(डॉ. अनूप कालरा)

स्वस्थ पशु प्रबंधन से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

-डॉ. प्रणय भारती एवं डॉ. विशाल मेश्राम

स्वच्छ दूध की गुणवत्ता को लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है तथा उसे संरक्षित करने की समयावधि भी अधिक होती है। शुद्ध दूध की व्यावसायिक कीमत अधिक होती है और उससे उच्च गुणवत्तायुक्त दुग्ध पदार्थों को बनाया जा सकता है। इसलिए दूध की शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए दूध में होने वाली गंदगी को दुग्ध उत्पादन स्तर पर ही नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि शुद्ध दूध न केवल उपभोक्ता के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि दुग्ध उत्पादन की आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद हैं।

स्वच्छ दूध से हमारा तात्पर्य ऐसे दूध से है, जिसे स्वस्थ गाय या भैंस के थन से प्राप्त किया गया हो और उसमें अच्छी खुशबू के साथ-साथ कम से कम जीवाणु हों और बाह्य पदार्थों, जैसे मिट्टी, धूल, मक्खियों तथा रोगजनकों से मुक्त हो।

स्वच्छ दूध की गुणवत्ता को लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है तथा उसे संरक्षित करने की समयावधि भी अधिक होती है। शुद्ध दूध की व्यावसायिक कीमत अधिक होती है और उससे उच्च गुणवत्तायुक्त दुग्ध पदार्थों को बनाया जा सकता है। इसलिए दूध की शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए दूध में होने वाली गंदगी को दुग्ध उत्पादन स्तर पर ही नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि शुद्ध दूध न केवल उपभोक्ता के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि दुग्ध उत्पादन की आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद हैं।

स्वच्छ दुग्ध का उत्पादन कैसे करें

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीकों का वर्णन करने से पहले हमे दूध को दूषित करने वाले स्रोतों के बारे मे पता होना आवश्यक है। दूध को दूषित करने वाले स्रोतों को मुख्यतः दो भागों मे बांटा गया है:-

आंतरिक कारक–आंतरिक कारकों में पशु के थन से होने वाली गंदगी और थनैला रोग मुख्य हैं। दुहन के शुरूआती दूध में जीवाणुओं की संख्या अधिक होती है, इसलिए शुरूआती एक दो छांछ को हटाना अच्छा रहता है।

बाह्य कारक– बाह्य कारकों मे पशु का शरीर, दूध दूहने का स्थान, ग्वाला एवं आहार व पानी मुख्य हैं। इसके साथ-साथ दूध संग्रहण में प्रयुक्त होने वाले बर्तनों एवं उपकरणों से भी दूध के दूषित होने की सम्भावना रहती है।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के उपाय

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लिए दिए गए तरीकों को अपनाया जा सकता है:-

- डेरी फार्म पर आहार, आवास एवं स्वास्थ्य पशु प्रबंधन।
- दूध के संग्रह हेतु उपयोग किए जाने वाले उपकरणों एव बर्तनों की साफ-सफाई।
- दूध दूहने की अच्छी आदतें।
- दूध के भंडारण, वितरण एवं कूलिंग की समुचित व्यवस्था

पशु आहार प्रबंधन

डेरी पशुओं को संतुलित आहार दिया जाना चाहिए, जिसमें हरे चारे, सूखे और सांद्रण का उचित लवण भी दिया जाना चाहिए। चारे में कवक संक्रमण को रोकने के लिए चारे का भंडारण सूखे स्थान पर किया जाना चाहिए।

पशु आहार को कीटाणुओं और कवकों के संदूषण से

बचाया जाना चाहिए। चारे की कमी के दौरान पशुओं को सूखा चारा जैसे सूखी घास या भूसा दिया जाना चाहिए। साथ ही साथ पशु राशन में खनिज लवण व विटामिन भी दिया जाना चाहिए, ताकि इनकी कमी को पूरा किया जा सके।

गाय या भैंस को ब्यांत के आसपास की अवधि में विटामिन ई और सिलेनियम दिया जाना चाहिए, ताकि पशु थन स्वास्थ्य को सुधारा जा सके। पशु को दूध निकालने के एक घंटे पहले चारा दिया जाना चाहिए, ताकि दूध मे चारे के द्वारा होने वाली गंदगी से बचा जा सके, तथा पशु को दूध निकालने के दौरान व्यस्त रखने के लिए सांद्रित मिश्रण दिया जाना चाहिए। दूध निकालते समय पशु को साइलेज और गीला चारा नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे दूध मे साइलेज की गंध आने की सम्भावना रहती है।

पशु आवास प्रंबधन

पशु आवास से भी दूध के दूषित होने की सम्भावना रहती है, इसलिए पशु आवास का साफ-सुथरा होना अति आवश्यक है। पशु आवास दूध को दूषित करने वाले कारकों जैसे बाहरी पशुओं, व्यक्तियों, वायु, वर्षा और अधिक गर्मी से रक्षा प्रदान करता है। अतः दूध की गुणवत्ता को भी बनाए रखने में मदद करता है।

दूध निकालने की जगह में पर्याप्त हवा का आदान-प्रदान होना चाहिए तथा प्रकाश की भी व्यवस्था होनी चाहिए। जल निकासी की भी पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए। नमी वाले स्थानों में फर्श को सूखा रखने के लिए बुझे चूने का इस्तेमाल किया जा सकता है।

पशुओं को पीने के लिए साफ पानी 24 घंटे उपलब्ध होना चाहिए। डेरी फार्म और पशु आवास की साफ-सफाई के लिए भी पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध होना चाहिए। पशु आवास की छत अच्छी होनी चाहिए और पर्याप्त मात्रा में हवा का आदान-प्रदान होना चाहिए।

बन्द बाड़ों को आरामदायक बनाने हेतु पर्याप्त ऊँचाई होनी चाहिए। यदि खुला बाड़ा है, तो उसकी फर्श साफ व शुष्क होनी चाहिए। पशु के गोबर और बचे हुए चारे को हटाने का प्रबंध किया जाना चाहिए।

पशु स्वास्थ्य

स्वच्छ दूध और लाभकारी डेरी के लिए पशुस्वास्थ्य पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। बीमार पशु से प्राप्त दूध में हानिकारक जीवाणु होते हैं, जो दूध के गुणवत्ता व उसके भंडारण की अवधि को कम कर देते हैं।

पशुओं को छुआछूत बीमारियों जैसे खुरपका मुँहपका, टी.बी. और थनैला के प्रति नियमित जाँच होनी चाहिए। जो पशु बीमारियों से ग्रसित हों अलग रखना चाहिए। पशु आवास को संक्रमण से मुक्त करने के लिए रोगाणुनाशक का प्रयोग किया जाना चाहिए।

दुहन के दौरान थन और थनैला रोग के लिए नियमित जांच करना चाहिए। डेरी पशुओं में खुरपका-मुँहपका और एन्थ्रेक्स के खिलाफ नियमित टीकाकरण कराया जाना चाहिए। शुद्ध दूध के साथ-साथ पशु की साफ-सफाई भी अति आवश्यक है।

पशुओं की त्वचा दूध को दूषित करने वाले जीवाणुओं को अधिक सतह प्रदान करती है। इसलिए पशु के पिछले हिस्से के बालों, पैर व पूँछ के बालों को नियमित अंतराल पर काटते रहना चाहिए, जिससे धूल और गोबर को चिपकने से बचाया जा सके। इसके अलावा यदि थन साफ दिखाई दे रहा है, तो भी उसे अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए।

दुग्ध उपकरणों व बर्तनों की साफ-सफाई

डेरी उपकरणों व बर्तनों की साफ-सफाई व देखभाल शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए सबसे कारगर तरीका है। सामान्यतः दुग्ध उपकरणों जैसे दुहन (मिल्किंग), मशीन, दुग्ध टैंक आदि को दुहान से लेकर भंडारण तक उपयोग में लाया जाता है। दूध निकालने से पहले और बाद में बर्तनों की अच्छी तरह सफाई करने से धूल और कीटाणु हट जाते हैं, दूध दुहने के पंद्रह मिनट पहले दूध के उपकरणों को सफाई वाले घोल से धो लेना उसके भंडारण अवधि को कम कर देते है। इसलिए पशु के खानपान, आवास और स्वास्थ्य प्रबंधन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे पशु स्वस्थ रहे और दूध में हानिकारक जीवाणुओं को कम किया जा सके।

स्वच्छ दुहान (हाइजेनिक मिल्किंग)

दूध में सूक्ष्मजीव, मशीन मिल्किंग व हैण्ड मिल्किंग दोनों के

द्वारा भी प्रवेश कर सकते है। हाथ से दुहन के दौरान, ग्वाले से होने वाला संदूषण मशीन मिल्किंग की तुलना में अधिक होता है। इसलिए ग्वाले को संक्रमित बीमारियों जैसे तपेदिक से मुक्त होना चाहिए। ग्वाले के नाखून साफ व कटे हुए होने चाहिए तथा साफ कपड़े पहने होना चाहिए और दुहन से पहले हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए तथा बाद में साफ एवं सूखे तौलिए से पोंछना चाहिए।

नियमित अंतराल पर दुहन करना, थनों से पूरा दूध निकालना और दुहन के दौरान साफ-सफाई सभी महत्वपूर्ण पहलू है, जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए। थन को अच्छी तरह साफ करना चाहिए और 30 सेकंड तक मालिश की जानी चाहिए तथा दूध निकालने से पहले थन को सूखे कपड़े से पोंछ लेना चाहिए।

शुरूआत में निकाले गए दूध को परीक्षण के लिए एक अलग बर्तन में इकट्ठा करना चाहिए तथा खराब दूध को हटा देना चाहिए। दूध को फर्श में नहीं गिरने देना चाहिए, क्योंकि इससे संक्रमण का खतरा होता है। दूध को जल्दी से जल्दी दूध वाले बर्तन में निकालना चाहिए और दुहन की पूरी प्रक्रिया को 6 से 8 मिनट में पूरा कर लेना चाहिए।

ग्वाले को अपने हाथ को पशु के शरीर से नही पोंछना चाहिए। दुहन के बाद निप्पल को एंटीसेप्टिक घोल जैसे पोटैशियम परमैंगनेट या आयोडीन घोल में डुबोया जाना चाहिए। प्रत्येक दुहन के बाद दुहन क्षेत्र (मिल्किंग एरिया) की अच्छे से सफाई की जानी चाहिए। दूध को साफ कपड़े या छलनी से छान लेना चाहिए और कपड़े को धोकर सूखा लेना चाहिए।

भंडारण, वहन व कूलिंग

दूध में जीवाणुओं की वृद्धि को रोकने में दूध भंडारण तापमान की मुख्य भूमिका होती है। शुद्ध दुग्ध उत्पादन का फायदा तब तक नहीं होगा, जब तक कि दूध के भंडारण तापमाप को उचित नहीं रखा जाएगा। दूध निकालने के बाद जितना शीघ्र ठंडा किया जाएगा, दूध की गुणवत्ता उतनी ही अच्छी रहेगी। दुहन के 2 घंटे के अंदर दूध को ठंडा करने से जीवाणुओं की वृद्धि को रोका जा सकता है। यदि दूध को ठंडा करना सम्भव न हो तो परिरक्षकों जैसे लैक्टोपराक्सिडेज का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे दूध को खराब होने से बचाया जा सके।

दूध को साफ ढक्कन लगे बर्तन तथा छायादार जगह में रखना चाहिए, ताकि संदूषण को कम किया जा सके और उसे छायादार जगह में रखना चाहिए। दूध के वहन हेतु साफ कंटेनर का इस्तेमाल किया जाना चाहिए और दूध के वहन का समय कम से कम होना चाहिए। दूध को वहन के समय अधिक झटकों से बचाना चाहिए, क्योंकि दूध की वसा ऑक्सीजन के सम्पर्क में खराब हो जाती है।

एक आदर्श मशीन मिल्किंग के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान मे रखना चाहिएः

- गाय या भैंस के थन को पोंछकर 1 से 2 मिनट मालिश की जानी चाहिए। सामान्यतः गाय के लिए 30 से 60 सेकण्ड और भैंस के लिए 60 से120 सेकण्ड मालिश करना चाहिए।
- स्ट्रिप कप की सहायता से दूध की असामान्यता की जाँच की जानी चाहिए।
- मिल्किगं मशीन के कप को अच्छी तरह लगाना चाहिए।
- मिल्किंग मशीन को अच्छी तरह से जाँच लेना चाहिए।
- निप्पल डिप का इस्तेमाल करना चाहिए।
- दूध की मात्रा को रिकॉर्ड किया जाना चाहिए।
- मिल्किंग मशीन के उचित क्रियान्वन के लिए मशीन निर्माता के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए।

शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण कदम

शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए डेरी फार्म की दैनिक गतिविधियाँ जैसे-1.फार्म स्तर पर प्रबंधन, 2. दुग्ध उपकरणों एवं बर्तनों की सफाई, 3. दूध निकालने के उचित तरीके, 4.भंडारण, वहन व कूलिंग की समुचित व्यवस्था आदि अहम भूमिका निभाती है। इसके साथ-साथ शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए निम्नलिखित सामान्य कदम उठाए जा सकते हैंः-

- दूध दुहन की प्रक्रिया एक निश्चित समय पर की जानी चाहिए और यदि दुहन के समय को परिवर्तित करने की

आवश्यकता हो तो उसे धीरे-धीरे बदलना चाहिए।

- दूध के बर्तनों व उपकरणों को प्रयोग में लाने से पहले और बाद में अच्छी तरह साफ करके सुखा लेना चाहिए। थन और निप्पल को गुनगुने पोटैशियम घोल से साफ करना चाहिए और धोते समय अच्छे से मालिश करने के बाद साफ व सूखे तौलिए से पोंछना चाहिए।
- थनैला रोग की पहचान के लिए स्ट्रिप विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विधि में चारों स्तनों के दूध को काले कपड़े से ढके कप में निकालना चाहिए। यदि पशु थनैला रोग से पीड़ित है, तो दूध के गुच्छे काले कपड़े में दिखाई देंगे। कैलीफोर्निया थनैला परीक्षण (सी.एम.टी.) उप-निदानिक थनैला को पहचानने का सबसे पुराना स्वर्णिम तरीका है और इससे थनैला रोग युक्त दूध तथा शुद्ध दूध को पहचाना जा सकता है।
- ग्वाले का संक्रमित रोगों से मुक्त होना अति आवश्यक है, अन्यथा ग्वाले से पशु को तपेदिक जैसी बीमारी होने का खतरा रहता है। ग्वाले के नाखून कटे हुए होने चाहिए तथा हाथों को अच्छी तरह से साबुन से साफ किया जाना चाहिए तथा सिर पर टोपी लगाई जानी चाहिए, ताकि बालों को दूध में गिरने से रोका जा सके। दुहन के दौरान ग्वाले को अपने हाथ पानी, दूध, लार या तेल से गीले नही करने चाहिए।
- तुरंत ब्यांत वाले एवं अधिक दूध देने वाले पशुओं का दूध, कम दूध देने वाले पशुओं से पहले निकाला जाना चाहिए। 10 लीटर तक दूध देने वाले पशुओं का दूध दिन में दो बार निकालना चाहिए, जबकि 12 से 15 लीटर तक दूध देने वाले पशुओं में दूध निकालने की आवृत्ति को 3 बार तक बढ़ाया जा सकता है।
- दुहन के लिए दूध निकालने की सबसे उत्तम विधि फुल हैंड को अपनाया जाना चाहिए तथा दूध निकालते समय अँगूठे को नहीं मोड़ना चाहिए, क्योंकि इससे स्तन में घाव होने का खतरा रहता है। ताजे दूध को मसलिन क्लॉथ से छान लेना चाहिए। दूध को ठंडा करने के लिए दुग्ध कैन के आसपास बर्फ रख सकते हैं और इसे संग्रह केन्द्रों से सहकारी केन्द्रों तक जल्द से जल्द पहुँचाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

सभी खाद्य पदार्थों में से दूध को इकट्ठा करना और उसे स्वच्छ तरीके से वितरित करना सबसे कठिन कार्य है। शुद्ध दूध के लिए पशु और ग्वाला दोनों ही मुख्य भूमिका निभाते हैं। इसलिए उनका साफ-सुथरा होना अति आवश्यक है।

पशुओं के स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी स्वास्थ्य सर्विस दी जानी चाहिए। इसके अलावा, पशुओं में समय से टीकाकरण की व्यवस्था की जानी चाहिए और छुआछूत वाली बीमारियों के लिए एक प्रामाणिक पशु चिकित्सक से जाँच करवाई जानी चाहिए।

गाँव स्तर पर पूरे समय पशु चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध करवाएं। दूध को खराब होने से बचाने हेतु दुग्ध संग्रह केन्द्रों को आसानी से पहुँचने योग्य जगह पर बनाएं। शुद्ध दुग्ध उत्पादन के लिए साफ-सफाई के साथ किसानों को जानकारी देने की भी जरूरत है। दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध शेड की सफाई, शुद्ध दुग्ध उत्पादन के तरीके, पशु स्वास्थ्य एवं दूध निकालने की सही विधि के बारे में अवगत कराना है। दुग्ध उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित करें, क्योंकि पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की मुख्य भूमिका होती है। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन व उच्च गुणवत्तायुक्त दुग्ध पदार्थों के उत्पादन को सुनिश्चित कर किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। □□

1. वैज्ञानिक, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन
2. वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केंद्र मंडला (म.प्र.)

आयुमिन वी5
विटामिन एंव खनिज तत्वों का संपूर्ण मिश्रण
AYURVET
पशु को स्वस्थ रखने में व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक।
पशु की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता करे।
पशु की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने में सहायता करे।
पैक
1 कि.ग्रा. पैक, 5 कि.ग्रा. पैक

हिमाचल की गौरी को राष्ट्रीय पहचान

-तरुण श्रीधर

पहाड़ी गाय का मूल मध्य और ऊंचे पहाड़ वाले क्षेत्र हैं। अधिकारिक रूप से चंबा, कांगड़ा, किन्नौर, कुल्लू, मंडी, शिमला, सिरमौर और लाहोल स्पीति में। इस पशु में छोटी कद काठी व छरहरे शरीर के होते संकर व विषम पहाड़ियों में कार्य करने की भरपूर क्षमता है। चाहे कड़ाके की ठंड हो या चारे का अकाल, पहाड़ी गाय सभी परिस्थितियों में अपने को ढाल लेती है। न इसे बांधने के लिए खूंटी चाहिए, न ही विश्राम या ठहरने के लिए गौशाला। मालिक से न कोई मांग, न कोई शिकायत। ऐसे विनीत एवं शिष्ट घरेलू पशु की अपने ही घर में उपेक्षा। इसकी तुलना में विदेशी व मिश्रित नस्ल की गाय को रक्षात्मक एवं लाड प्यार का वातावरण मिला।

देह काली है, कहीं कहीं भूरी भी है या फिर दोनों रंगों का मिश्रण है, पर यह नाम है गौरी। दशकों से तरस रही थी पहचान को, अपने ही घर में। पर अभिभावकों का मोह था विदेशी या मिश्रित नस्ल से। गौरी न नाराज हुई और न ही किसी प्रकार के रोष की अभिव्यक्ति की। विनम्रतापूर्वक अपने भाग्य से समझौता कर जीवनयापन करती रही। अंततः शासकीय तंत्र ने भी यह मान लिया कि हिमाचल प्रदेश में एक पहाड़ी गाय है, जो सबसे अलग है, विशिष्ट है। इस वर्ष गौरी को भारत सरकार की कृषि अनुसंधान परिषद् की संस्था राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो ने हिमाचल की पहाड़ी गाय के शीर्ष से अलग नस्ल के रूप में मान्यता दी।

पहाड़ी गाय का मूल मध्य और ऊंचे पहाड़ वाले क्षेत्र हैं। अधिकारिक रूप से चंबा, कांगड़ा, किन्नौर, कुल्लू, मंडी, शिमला, सिरमौर और लाहोल स्पीति में। इस पशु में छोटी कद काठी व छरहरे शरीर के होते संकर व विषम पहाड़ियों में कार्य करने की भरपूर क्षमता है। चाहे कड़ाके की ठंड हो या चारे का अकाल, पहाड़ी गाय सभी परिस्थितियों में अपने को ढाल लेती है। न इसे बांधने के लिए खूंटी चाहिए, न ही विश्राम या ठहरने के लिए गौशाला। मालिक से न कोई मांग, न कोई शिकायत। ऐसे विनीत एवं शिष्ट घरेलू पशु को अपने ही घर में उपेक्षा। इसकी तुलना में विदेशी व मिश्रित नस्ल की गाय को रक्षात्मक एवं लाड प्यार का वातावरण मिला। गोद लिए बच्चे को भी उतना ही प्यार दुलार और सुख सुविधाएं मिलें, जितनी सगे को, पर गोद लिए विदेशी बच्चे के घर में प्रवेश के बाद सगे को उपेक्षित करना कहां का न्याय है?

ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई बढ़ती हुई आर्थिकी और वाणिज्यकीरण से। गौरी सभी गुणों की धनी है सिवाय एक के, दूध कम देती है। पुराने समय में लगभग सभी ग्रामीण देसी गाय का पालन करते थे, पर दूध का व्यवसाय नहीं करते थे। दूध केवल परिवार के प्रयोग के लिए था और जो बच जाता, उसे रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ बांट लिया जाता था। गौपालन सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा था।

घर में पशु, विशेष तौर पर देसी गाय रखना भावनात्मक

निर्णय होता था। मुझे याद है कि कांगड़ा में 1988 में, जब डेरी व्यवसाय का प्रचलन भी हो चुका था, मुझसे उन सज्जन ने लाख आग्रह पर भी गाय के दूध के पैसे नहीं लिए जो मैं अपने छोटे बच्चे के लिए उनसे लेता था। उनका कहना था कि गाय के दूध का व्यापार करूंगा तो पाप लगेगा। कृषि भी पूर्ण रूप से पशु आधारित थी, अतः गाय-बैल को परिवार की तरह रखा जाता था।

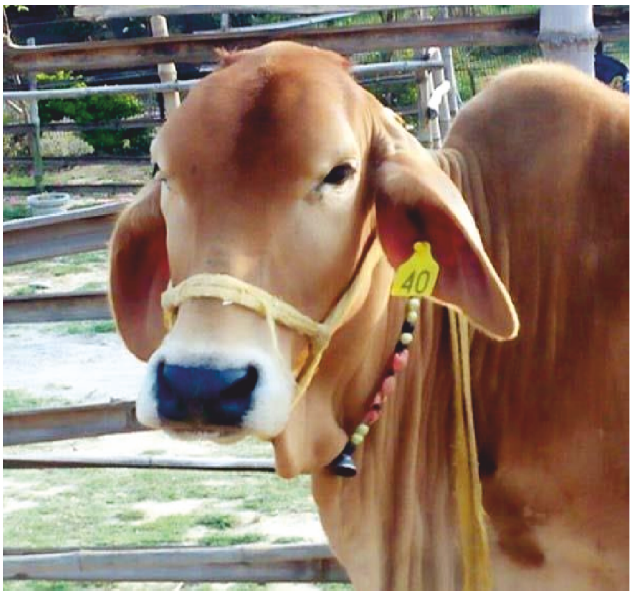

जब पशुपालन मुख्यतः गाय व भैंस पालन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों की आय में वृद्धि में योगदान की अपार संभावनाओं का बोध हुआ तो धीरे धीरे डेरी एक व्यवसाय के रूप में उभरा। ऑपरेशन फ्लड के माध्यम से देश में दुग्ध क्रांति की शुरूआत हुई। रणनीति बनी कि दुग्ध व्यवसाय को आकर्षक बनाने के लिए किसानों के पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाया जाए।

अधिक दूध देने वाली विदेशी प्रजाति के पशु आयात कर प्रजनन के कार्यक्रमों द्वारा किसानों को विदेशी या फिर मिश्रित नस्ल के पशु उपलब्ध होने लगे। डेरी ग्रामीण क्षेत्रों में एक ठोस विकल्प के रूप में उभरा। अब पशुपालन भावनात्मक क्रिया से दूर एक आर्थिक गतिविधि बन गया। ऐसे में स्वाभाविक है कि गौरी बोझ लगने लगी। कहां 5 से 10 लीटर प्रतिदिन की जर्सी या संकर गाय और वहां 1/15 लीटर वाली देसी। यहां किसानों को शासकीय व्यवस्था ने निराश किया।

पशु उत्पादकता की दीर्घकालिक निरतंरता बरकरार रखने के लिए अति आवश्यक है कि पशुधन की विविधता को सरंक्षित रखा जाए। एक ही प्रकार के आनुवांशिक गुणों वाला पशुधन बीमारियां, जलवायु परिवर्तन, पानी व चारे के अभाव के प्रति अति संवेदनशील होता है और इनसे जूझने की क्षमता भी दुर्बल होती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के संस्थान खाद्य एवं कृषि संगठन का मानना है कि विदेशी नस्लों पर अत्यधिक बल पशुध्न के भविष्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है। क्योंकि पुरानी सशक्त नस्ले लुप्त होती जा रही हैं और विदेशी नस्लें नए रोगजनकों का शिकार बन रही हैं। इससे मानव स्वास्थ्य पर भी खतरा बन जाता हे। भारत जैसे देश में अधिकतर निर्धन किसान देसी व स्थानीय नस्लों को ही पालने का सामर्थ्य रखते हैं। अतः यह आवश्यक है कि इन नस्लों का संवर्धन कर विकास किया जाए, ताकि पशुपालन का व्यावसायिक लाभ निर्धन वर्ग भी ले पाए।

विश्व में गाय की 800 मान्यता प्राप्त नस्लों में 50 शुद्ध भारतीय हैं और अब इनमें एक हिमाचली पहाड़ी गाय। वर्षों से बंद द्वार खुल गए हैं, इस नस्ल के संवर्धन, वैज्ञानिक प्रबंधन और नस्ल सुधार के लिए।

सरकार अधिकारिक तौर पर इस पर उपयुक्त वित्तीय प्रबंध कर सकती है। एक ठोस नस्ल सुधार कार्यक्रम सबसे अधिक महत्वपूर्ण पग होगा। प्रदेश के 18.26 लाख गौवंश में 7.59 लाख देसी गाय हैं। जहा अन्य गाय औसतन प्रतिदिन 5.09 लीटर दूध देती हैं, वहीं देसी गाय की औसत मात्रा 1.8 लीटर प्रतिदिन है।

किसान के लिए व्यावहारिक तभी होगा, जब इसकी उत्पादकता में वृद्धि हो। भारत की गिर गाय, जिसका पूरे विश्व में बोलबाला है, यहां औसतन प्रतिवर्ष 1600-1700 लीटर दूध देती है। वहीं ब्राजील में इसकी औसत प्रतिवर्ष 3500 लीटर है। यह संभव हुआ नस्ल सुधार से। गौरी का खोया मान सम्मान मात्र पंजीकरण से नहीं अपितु तभी लौटेगा, जब यह किसान के लिए आर्थिक लाभ का सौदा साबित होगी। कहावत तो सुनी ही होगी-दुधारू गाय की लात भली। □□

लेखक भारतीय प्रशासिक सेवा के पूर्व अधिकारी हैं

एक्सापार

AYURVET™

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे

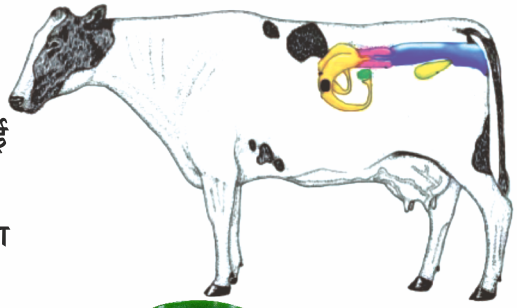

- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

डेरी व्यवसाय की सफलता हेतु व्यावहारिक जानकारी

-डॉ. संजय कुमार मिश्र

भारत में कुल जनसंख्या के लगभग 60 प्रतिशत लोग गांव में निवास करते हैं। इनका प्रमुख कार्य कृषि एवं पशुपालन है। वर्तमान में आबादी बढ़ने के साथ प्रति व्यक्ति कृषि जोत कम हो रही है, जिससे बड़ी संख्या में किसान, लघु एवं सीमांत कृषक तथा भूमिहीन की श्रेणी में आ गए हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में पशुपालन स्वरोजगार एवं आय का नियमित साधन बन चुका है। औद्योगिकरण एवं गांव से शहरों में पलायन के कारण भारत में कृषि की हिस्सेदारी सकल घरेलू उत्पाद अर्थात जी.डी.पी.में घट रही है, जबकि पशुधन द्वारा जी.डी.पी.में हिस्सा बढ़ रहा है। इस समय डेरी पालन आय एवं विकास का उत्तम साधन बन चुका है। डेरी पशु का दूध उत्पादन पहले की तुलना में कई गुना बढ़ना विभिन्न प्रकार के डेरी विकास कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू करने से संभव हुआ है। आज हम विश्व में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देश के रूप में प्रथम स्थान पर हैं, परंतु प्रति पशु दुग्ध उत्पादकता अभी भी काफी कम है, जिसे समेकित प्रयासों से अभी और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

डेरी व्यवसाय के वैज्ञानिक तरीके अपनाकर पशुपालक अपने पशुओं के दूध को 2 से 3 गुना तक बढ़ा सकते हैं। इससे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातों की जानकारी दी जा रही है, जिन पर पशुपालकों को ध्यान देना नितांत आवश्यक है।

डेरी पशु की दुग्ध उत्पादकता पशु की गर्भावस्था एवं बच्चे के जन्म पर निर्भर करती है। गर्भकाल में गर्भित पशु को पशुपालक के लिए दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ गर्भस्थ बच्चे की वृद्धि एवं स्वास्थ्य के लिए पोषण देने का कार्य भी करना पड़ता है। पशु की गर्भित कराने की तिथि का लेखा जोखा एवं गर्भ परीक्षण कराना भी अत्यंत आवश्यक है, ताकि गर्भित होने पर पशु के ब्याने की संभावित समय का पता लगाया जा सके और पशु को भी बच्चा देते समय विशेष ध्यान रखकर अनहोनी से बचाया जा सके। इस अवस्था में गर्भित पशु के शरीर में महत्वपूर्ण परिवर्तनों एवं अगले दूध काल की तैयारी को ध्यान में रखते हुए पशु को ब्याने के लगभग 2 माह पहले से दूध निकालना बंद कर देना चाहिए। इस अवधि को शुष्क काल कहा जाता है। इस अवधि में पशु से दुग्ध प्राप्त नहीं होता है इसलिए पशुपालक पशु पर ध्यान देने का महत्व नहीं समझते हैं, जोकि नितांत गलत है। गर्भकाल में पशु के विभिन्न परिवर्तनों की वजह से उत्पादन एवं विकास प्रभावित होता है। प्रमुख रूप से इस अवधि में आंतरिक परिवर्तन, जिसमें थनों का विकास, खीस एवं दुग्ध उत्पादन की तैयारी होती है, जिसका दुग्ध उत्पादन में अत्यंत महत्त्व है।

अधिकांश गर्भित पशु ब्याने से कुछ दिन पूर्व स्वयं दूध देना बंद कर देते हैं। परंतु यदि दूध उतरना बंद न हो तो दूध का दुहन धीरे-धीरे कम मात्रा में करना चाहिए। प्रारंभ में सप्ताह में दिन में एक बार तथा अगले सप्ताह से एक दिन छोड़कर दूध निकालें। अंतिम दुहन के समय थनों को कीटाणुरोधी औषधि से धोना चाहिए। पशुओं को ब्याने की अनुमानित तिथि से 2 माह से लेकर 3 हफ्ते तक तथा दूसरी श्रेणी में 2 से 20 दिन पहले से ब्याने के समय तक विशेष सावधानी रखें।

डेरी प्रबंध

पशु के रहने का स्थान खुला और ऐसी जगह पर हो जहां सूर्य की रोशनी हर तरफ से आए, ताकि फर्श हर समय सूखा रहे(मानक क्षेत्र 2.5 से 3 वर्ग मीटर प्रति पशु)। सुव्यवस्थित आवास न होने की स्थिति में पशु को पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। स्वच्छ पानी की व्यवस्था छायादार जगह पर हो और पशु को आसानी से उपलब्ध हो। फर्श पक्का एवं फिसलन रहित हो। 24 घंटे में ब्याने की स्थिति वाले पशुओं के लिए विशेष रुप से जमीन या फर्श पर पुआल बिछा दें। स्वस्थ पशुओं को रोगी पशुओं से दूर रखें। विशेषकर गर्भपात हो चुके पशुओं

की पशु चिकित्सक से नियमित जांच कराते रहें।

ताजा और स्वच्छ पानी नियमित रूप से सर्दियों में तीन बार तथा गर्मियों में 5 बार अवश्य पिलाएं। यदि पशु खुले आवास में रहते हैं, तो उनके बच्चों को समय पर अर्थात् 2 हफ्ते के अंदर सींग रहित कराएं। नर बछड़े का 6 माह की उम्र पर बधियाकरण अवश्य कराएं। तेज गर्मी के मौसम में भैंसों को पानी से जरूर नहलाएं तथा डेरी पशुओं के लिए पशुशाला के आसपास छायादार वृक्ष अवश्य लगाएं।

पशु पोषण

नवजात बच्चों को जन्म के 1 घंटे के अंदर खीस अवश्य पिलाएं। पशुओं को वर्ष भर हरा चारा खिलाएं। 10 लीटर तक दूध देने वाली गाय को 20 से 30 किलोग्राम हरा चारा खिलाएं। जिसमें दलहनी एवं गैर दलहनी चारा मिला हुआ हो अथवा 15 किलोग्राम हरा चारा 5 किलोग्राम शुष्क पदार्थ के साथ प्रतिदिन खिलाएं। पशुओं को जीवन रक्षा हेतु एक से डेढ़ किलोग्राम दाना मिश्रण अवश्य खिलाएं। हरा चारा उगाने के लिए उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करें, जिससे प्रति एकड़ भूमि पर अधिक चारा उत्पन्न हो सके। सिंचाई के समुचित साधनों की व्यवस्था करें तथा चारे की फसलों के लिए जैविक खाद का प्रयोग करें।

गर्भित पशुओं को ऐसा संतुलित आहार देना चाहिए, जिससे मां एवं पलने वाले बच्चे की जरूरत पूरी हो सके। शुष्क काल के प्रारंभ में चारा एवं दाना उचित मात्रा में खिलाना चाहिए, परंतु ब्याने के समय आहार विशेष रुप से उसी प्रकार का दें जैसा दूध शुरू होते समय देते हैं। प्रारंभ में दाने की मात्रा 1 किलो जिसे अगले 2 सप्ताह में डेढ़ किलो तथा अंतिम 2 सप्ताह में ढाई किलो प्रति पशु देना चाहिए। पशु को मिनरल मिक्सचर एवं विटामिंस भी खिलाएं।

पशुपालक निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें-

- चारा दाना नमी से दूर रखें। फफूंदीयुक्त/संक्रमित चारा न दें।
- रुचिकर एवं सुपाच्य चारा ही दें। प्रोटीन युक्त मिश्रित आहार देना पोषक तत्वों के संतुलन के लिए अति उत्तम है।
- ब्याने से पहले अधिक वसायुक्त आहार देने से यकृत खराब हो जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। पर्याप्त मात्रा में फाइबर रेशा 12 किलो प्रति पशु प्रतिदिन देने से आमाशय के खिसकाव से बचाव संभव है।
- आहार में 50 ग्राम, खड़िया अर्थात् कैल्शियम देने से मिल्क फीवर बीमारी से बचाव किया जा सकता है, परंतु यहां यह विशेष ध्यान रखना है कि गर्भित पशु को ब्याने की संभावित तिथि से 45 दिन पूर्व कैल्शियम देना बंद कर देना चाहिए, जिससे आने वाली ब्यांत में, पशु पूरी क्षमता से दूध उत्पादन कर सके ।
- पोटेशियम व सोडियम लवणों के उचित समन्वय वाले दाना देकर उसको अयन शोथ या मैस्टाइटिस से बचा सकते हैं।

दुग्ध दोहन

दूध दोहन से पूर्व हाथों को साबुन एवं पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से धोएं। दुग्ध दोहन के दौरान पशु की पूंछ को बांध दें। दूध दोहन का क्षेत्र साफ रखें, उसमें मक्खियों को न आने दे, धूल आदि को साफ करते रहें। दोहन के स्थान को धुएं से रहित रखें। दोहन के बर्तनों की सफाई पर विशेष ध्यान रखें। दूध निकालने के पश्चात्, बच्चे को दूध पीने के लिए ना छोड़े एवं थनों को पोटेशियम परमैंगनेट के 1:1000 घोल से धुलाई करें।

पशु स्वास्थ्य रक्षा

पशुओं में संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण समय से करवाएं। जैसे गलघोंटू वर्षा के आरंभ से पहले एवं खुरपका मुंहपका रोग के लिए फरवरी और सितंबर महीना उपयुक्त होते हैं। जो पशु संक्रामक रोग से ग्रसित हो उन्हें स्वस्थ पशुओं से अलग रखें, बीमार पशुओं का उपचार योग्य पशु चिकित्सक से कराएं। पशुओं में परजीवियों की रोकथाम के लिए पेट के कीड़ों को मारने के लिए उपयुक्त दवा पशु चिकित्सक की सलाह से दें। गर्भित पशु को शुष्क काल में भी दुग्धकाल की भांति उत्तम पोषण, संतुलित आहार एवं उचित प्रबंधन द्वारा समन्वय करते हुए ब्यांत के पश्चात् भी स्वस्थ पशु एवं बच्चा रखना संभव किया जा सकता है। इससे पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता का विकास कर पशुपालक लाभ लेकर अपने आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में बढ़ोतरी कर सकते हैं। □□

पशु चिकित्सा
अधिकारी चोमुहां मथुरा

AYURVET™

GES™ ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

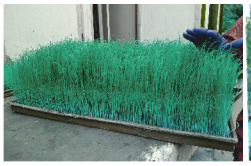

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

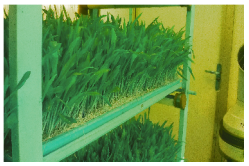

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स
तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

औषधीय पौधों की खेती ने किया मालामाल 25 से ज्यादा जड़ी-बूटियाँ उगा रहा यह किसान

मेरठ (उत्तर प्रदेश) का यह किसान 25 से ज्यादा औषधीय पौधों की खेती कर रहा है। करीब 28 साल पहले पांच बीघे जमीन में औषधीय पौधों की खेती की शुरुवात करने वाले अशोक चौहान एक वक्त खेती में काफी नुकसान झेल रहे थे, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। यही वजह रही कि आज वह न सिर्फ 110 एकड़ में 25 से ज्यादा औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं, बल्कि 300 से ज्यादा लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

मेरठ (उत्तर प्रदेश) का यह किसान 25 से ज्यादा औषधीय पौधों की खेती कर रहा है। करीब 28 साल पहले पांच बीघे जमीन में औषधीय पौधों की खेती की शुरुवात करने वाले अशोक चौहान एक वक्त खेती में काफी नुकसान झेल रहे थे, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। यही वजह रही कि आज वह न सिर्फ 110 एकड़ में 25 से ज्यादा औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं, बल्कि 300 से ज्यादा लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले का यह किसान सिर्फ मेरठ में ही नहीं, बल्कि मथुरा, सहारनपुर और उत्तराखंड में भी औषधीय पौधे उगा रहा है। यही वजह है आज उनकी खेती की उपज दिल्ली, राजस्थान जैसे राज्यों के बाजारों में भी जाती है और उसकी अच्छी कीमत भी मिलती है।

आज किसान अशोक चौहान के पास औषधीय पौधों की खेती की जानकारी लेने के लिए दूर-दूर से किसान आते हैं। इतना ही नहीं विदेशों से भी कई लोग उनकी खेती करने के तरीके देखने और सलाह लेने के लिए आ चुके हैं।

उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद के दौराला ब्लॉक में गाँव मटौर के रहने वाले किसान अशोक चौहान बताते हैं, ''शुरुआत में पांच बीघा जमीन से औषधीय पौधों की खेती की शुरुआत की थी, उस समय लगभग एक लाख से अधिक का खर्चा आया, पहले काफी नुकसान झेलना पड़ा, जीवन में कई उतार-चढ़ाव आये, सालों कमाई नहीं हुई, मगर डटे रहे, अब मुझे गर्व महसूस होता है कि आज मैं करीब 110 एकड़ में औषधीय पौधों की खेती कर रहा हूँ।''

अशोक ने सबसे पहले हल्दी और तुलसी की खेती से शुरुआत की। धीरे-धीरे उन्होंने और औषधीय पौधों को भी अपनाया और अब वह सर्पगंधा, शतावरी, अकरकरा, एलोवेरा जैसी करीब 25 से अधिक मेडिसिनल प्लांट की खेती कर रहे हैं।

अशोक बताते हैं, ''हमारे बाबा जी किसी जमाने में वैध का काम करते थे, तो उस समय गाँव के आसपास के लोग उनकी हाथ से बनी दवाई का इस्तेमाल करते थे और रोगमुक्त हो जाते थे, वह भी औषधीय पौधे अपने घर में उगाते थे, जिससे गांव के आसपास के लोगों का उपचार किया जा सके।''

''बाबा के बाद हमारे पिताजी को भी मेडिसन प्लांट का ज्ञान था तो उन्होंने भी इस कार्य को जारी रखा वह हमें भी ज्ञान देते थे कि कहीं डॉक्टर के पास आपको जाने की जरूरत नहीं है, हमारे आस-पास ऐसी औषधियां पाई जाती हैं कि जिससे हम छोटे-मोटे रोग से मुक्त हो सके।'' यह अशोक बताते हैं।

यही वजह रही कि अशोक ने अपने पारिवारिक माहौल को देखते हुए इसी क्षेत्र में कुछ करने की ठानी, ताकि समाज के हर वर्ग के लोगों को इसका लाभ मिल सके।

अशोक एमएससी बॉटनी की पढ़ाई के लिए उत्तराखंड

औषधीय पौधों की खेती-कम लागत अधिक मुनाफा

देश-दुनिया में हर्बल उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में किसान परंपरागत खेती के अलावा औषधीय और जड़ी-बूटियों की तरफ भी अपना रुख कर रहे हैं। भारत में औषधीय पौधे से बनी दवाओं का लगभग 8 हजार करोड़ रुपए का बाजार है। ऐसे में, सरकार भी औषधीय खेती को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है। इसमें औषधीय खेती के लिए किसानों को अनुदान दिया जा रहा है।

भारत सरकार ने नवंबर 2000 में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड(एनएमपीबी) की स्थापना की थी। एनएमपीबी औषधीय पौधों, समर्थन नीतियों और व्यापार, निर्यात, संरक्षण व खेती के विकास से संबंधित सभी कार्यक्रमों का संचालन करता है। इसके जरिये आपको आयुर्वेदिक चिकित्सा, अनुसंधान, औषधीय पौधों की खेती पर आने वाली लागत और फसल की देखभाल आदि के बारे में जानकारी मिलती है। अगर आप एनएमपीबी की वेबसाइट पर जाएँ तो यहाँ पर आपके लिए औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता से संबंधित केंद्रीय योजनाओं के बारे में भी जानकारी उपलब्ध है।

वर्तमान में लगभग 80 प्रतिशत औषधीय पौधे प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किये जाते हैं। जबकि जंगलों के कट जाने और बढ़ती हुई मांग के कारण प्राकृतिक स्रोतों से औषधीय पौधों की मांग को पूरा करना अब काफी मुश्किल हो गया है। ऐसे में, अगर आप औषधीय पौधों की खेती करते हैं, तो आपको इसमें अच्छा मुनाफा होगा।

गए। वहीं पर उन्हें औषधीय पौधों की तमाम जानकारी मिली। पढ़ाई पूरी करने के बाद कुछ दिन उन्होंने प्राइवेट नौकरी भी की, मगर उनका मन नहीं लगा, नौकरी छोड़ कर वह अपने गाँव वापस लौट आए और औषधीय पौधों की खेती शुरू की है।

अशोक चौहान बताते हैं, ''हम अभी मेरठ में करीब 25 से अधिक औषधि पौधों की खेती कर रहे हैं। इनमें काली हल्दी, तुलसी, सर्पगंधा, सतावरी, अकरकरा, एलोवेरा, केवकंद, कालमेघ चित्रक, अनंतमूल, मैदा छाल जैसे पौधे शामिल हैं, जिससे हमें हर साल अच्छा खासा मुनाफा मिल जाता है।''

किसान अशोक चौहान बताते हैं, ''आने वाला समय हर्बल या नैचुरल का ही है। मेरे पास तमाम प्रकार की दवाइयां हैं, जिससे मैंने खुद रिसर्च की है और सभी जड़ी बूटियों द्वारा निर्मित हैं। खुद जड़ी-बूटियों की खेती कर उन्हीं से मैं यह दवाई तैयार करता हूं। जो साइंस और बॉटनी के छात्र हैं वह मुझसे जानकारी लेने के लिए समय-समय पर आते रहते हैं और मैं उन्हें हमेशा प्रेरित करता हूं।''

अशोक चौहान ने औषधीय पौधों की खेती में 300 से ज्यादा महिलाओं और पुरुषों को रोजगार दिया हुआ है। ये सभी मेरठ, सहारनपुर, मथुरा और उत्तराखंड के हैं, जो फार्म में काम करने के साथ औषधीय पौधों की खेती के बारे में भी जानकारी एकत्र करते रहते हैं।

औषधीय पौधों की खेती देखने आये कई विदेशी मेहमान के बारे में अशोक चौहान बताते हैं, ''हमारी औषधीय पौधों की खेती को देखने के लिए देश से नहीं, बल्कि विदेशों के कई लोग हमारे यहां आ चुके हैं। उन्होंने हर्बल या मेडिसिनल प्लांट के बारे में जानकारी ली और हमारी खेती को देखकर काफी सराहना भी की। इतना ही नहीं उन्होंने अपने यहां के किसानों को ट्रेनिंग देने आने के लिए न्योता भी दिया।''

'बाजार की समस्या नहीं'

किसान अशोक चौहान बताते हैं, ''जो मेडिसन प्लांट की खेती हम कर रहे हैं, तो उनके लिए बाजार की समस्या नहीं होती, क्योंकि फार्मेसी कंपनियां किसान से सीधा संपर्क करती हैं और अच्छे दामों में माल खरीदती हैं, तो बाजारों की तो कोई समस्या ही नहीं है।'' वह आगे कहते हैं, ''हम अपने माल की बात करें, तो हमारा माल राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली जैसे अन्य राज्यों में जाता है, जिसमें हम डिमांड भी पूरी नहीं कर पाते।''

□□

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल,
केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3,
सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.).
दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... ''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली'' के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

AYURVET™

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी, पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत, यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट

लीवर टॉनिक

यकृफिट के उपयोग

- यकृत को क्षति से बचाने हेतु
- कमजोरी या बीमारी से उभरते हुए पशु के दुर्बल यकृत को स्वस्थ करने हेतु
- यकृत में सूजन, पीलिया, विषाक्तता, लीवर फ्लूक या अन्य पेट के कीड़ों के इलाज में सह-उपचार हेतु
- मेमने, बछड़े या बछियों के शारीरिक विकास हेतु
- कार्यक्षमता तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने हेतु

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

•250 मि.ली. पैक में भी उपलब्ध

देश में पहली बार शुरू होने वाली है गधी के दूध की डेरी, ₹7000 लीटर भाव

आपने अभी तक गाय, भैंस, बकरी या ऊंट के दूध का सेवन किया है या सुना होगा, लेकिन देश में पहली बार गधी के दूध की भी डेरी खुलने वाली है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि गधी का दूध शरीर का इम्यून सिस्टम ठीक करने में भी काफी अहम भूमिका निभाता है। देश में पहली बार राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (एनआरसीई) हिसार में हलारी नस्ल की गधी के दूध की डेरी शुरू होने जा रही है। इसके लिए एनआरसीई ने १० हलारी नस्ल की गधियों को पहले ही मंगा लिया था। इनकी मौजूदा समय में ब्रीडिग की जा रही है।

आपने अभी तक गाय, भैंस, बकरी या ऊंट के दूध का सेवन किया है या सुना होगा, लेकिन देश में पहली बार गधी के दूध की भी डेरी खुलने वाली है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि गधी का दूध शरीर का इम्यून सिस्टम ठीक करने में भी काफी अहम भूमिका निभाता है।

देश में पहली बार राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (एनआरसीई) हिसार में हलारी नस्ल की गधी के दूध की डेरी शुरू होने जा रही है। इसके लिए एनआरसीई ने 10 हलारी नस्ल की गधियों को पहले ही मंगा लिया था। इनकी मौजूदा समय में ब्रीडिग की जा रही है।

सात हजार रुपए लीटर बिकेगा दूध

ब्रीडिग के बाद ही डेरी का काम जल्द शुरु कर दिया जाएगा। गुजरात की हलारी नस्ल की गधी का दूध औषधियों का खजाना माना जाता है। यह बाजार में दो हजार से लेकर सात हजार रुपये लीटर तक में बिकता है। इससे कैंसर, मोटापा, एलर्जी जैसी बीमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित होती है। इससे ब्यूटी प्रोडक्ट भी बनाए जाते हैं, जो काफी महंगे होते हैं।

डेरी शुरू करने के लिए एनआरसीई हिसार के केंद्रीय भैंस अनुसंधान केंद्र व करनाल के नेशनल डेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों की मदद भी ली जा रही है।

बच्चों को गधी के दूध से नहीं होगी एलर्जी

इस प्रोजेक्ट पर काम रहीं एनआरसीई की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर अनुराधा भारद्वाज बताती हैं कि कई बार गाय या भैंस के दूध से छोटे बच्चों को एलर्जी हो जाती है, मगर हलारी नस्ल की गधी के दूध से कभी एलर्जी नहीं होती। इसके दूध में एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी एजीन तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर में कई गंभीर बीमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

गधी के दूध पर शोध का काम एनआरसीई के पूर्व डॉयरेक्टर डॉक्टर बीएन त्रिपाठी ने काम शुरू कराया था। एनआरसीई के निदेशक डॉक्टर यशपाल ने बताया कि इस दूध में नाममात्र का फैट होता है।

प्रोडक्ट भी हो रहे हैं तैयार

डेरी से पहले डॉ. अनुराधा ने ही गधी के दूध से ब्यूटी प्रोडक्ट बनाने का काम किया था। उनकी ईजाद तकनीक को कुछ समय पहले ही केरल की कंपनी ने खरीदा है और ब्यूटी प्रोडक्ट तैयार किए जा रहे हैं। गधी के दूध से साबुन, लिप बाम, बॉडी लोशन तैयार किए जा रहे हैं। □□

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

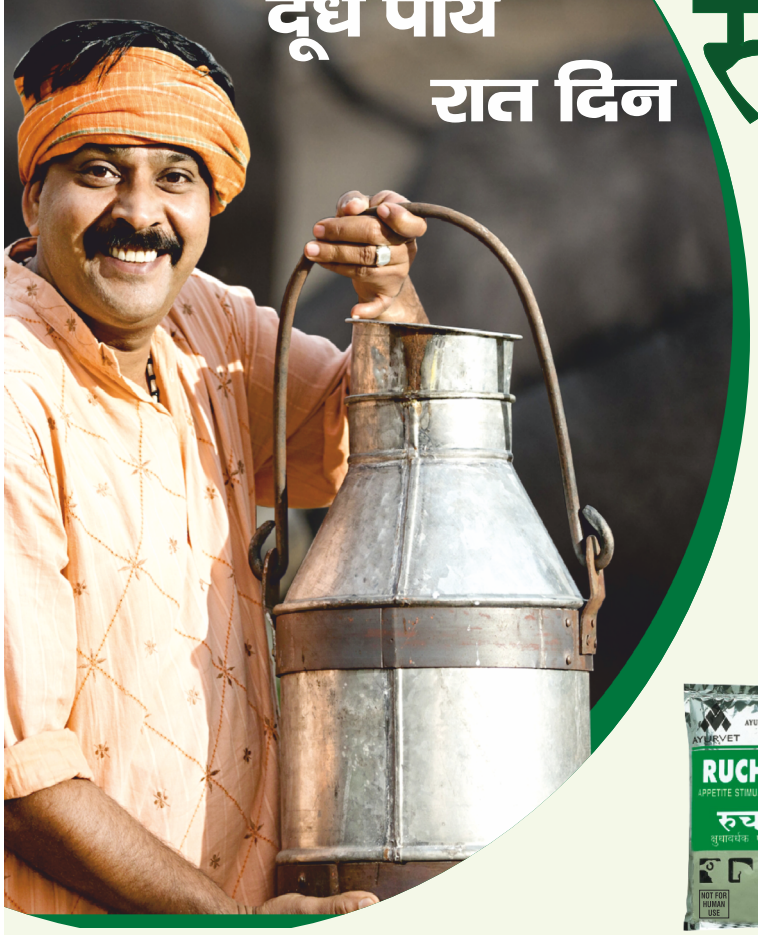

किसानों को सोलर प्लांट और बायोगैस के लिए आसानी से कर्ज मिले-आरबीआई ने बदले नियम

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने प्राथमिकता क्षेत्र ऋण के दिशा निर्देशों में बदलाव किये हैं। केंद्रीय बैंक ने कहा है कि इससे किसान और नये स्टार्टअप्स के लिए लोगों को आसानी से लोन मिल सकेगा

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) ने प्राथमिकता क्षेत्र के कर्ज के नियमों में कई बदलाव किये हैं। इन बदलावों से छोटे और सीमांत किसानों को आसानी से फायदा मिल सकता है। नए स्टार्टअप्स को भी अब 50 करोड़ रुपए तक के लोन आसानी से मिल सकेगा।

देश के किसानों को सोलर और कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट लगाने के लिए बैंकों की ओर से कर्ज उपलब्ध कराया जाएगा। नई गाइडलाइंस जारी करते हुए आरबीआई ने कहा कि प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (प्रायोरिटी सेक्टर लेंडिंग, पीएसएल) दिशा निर्देशों की वृहद समीक्षा के बाद उसे उभरती प्राथमिकताओं के अनुकूल बदला गया है।

केंद्रीय बैंक ने कहा कि सभी अंशधारकों से विचार-विमर्श के बाद क्षेत्र के विकास पर ध्यान दिया जायेगा। आरबीआई का कहना है कि नये दिशा निर्देशों से कर्ज से वंचित क्षेत्रों तक ऋण की पहुंच को बेहतर किया जा सकेगा। इससे छोटे और सीमान्त किसानों तथा समाज के कमजोर वर्गों को अधिक कर्ज उपलब्ध कराया जा सकेगा साथ ही इससे अक्षय ऊर्जा, स्वास्थ्य ढांचे को भी कर्ज बढ़ाया जा सकेगा।

रिजर्व बैंक ने कहा कि नये बदलावों की वजह से नवीकरणीय ऊर्जा और हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में भी क्रेडिट फ्लो बढ़ेगा। इसकी वजह यह है कि नवीकरणीय ऊर्जा के लिए कर्ज की सीमा को बढ़ाकर दोगुना कर दिया गया है। इसके साथ ही हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए भी लोन की सीमा को दोगुना तक बढ़ाया गया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि आरबीआई ने पीएसएल से जुड़े दिशा-निर्देश किए हैं। इससे ऋण की कमी वाले क्षेत्रों में और क्रेडिट को सक्षम बनाया जाएगा।

आरबीआई के मुताबिक, पीएसएल में स्टार्टअप्स के लिए 50 करोड़ रुपए का बैंक फाइनेंस मिल सकेगा।

अब किसानों को सोलर प्लांट्स लगाने और कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट्स के लिए भी प्रायोरिटी सेक्टर के तहत लोन मिल सकेगा। आयुष्मान भारत के तहत क्रेडिट भी डबल कर दिया गया है। आरबीआई ने इससे पहले पीएसएल दिशानिर्देश की समीक्षा आखिरी बार अप्रैल 2015 में की थी।

केंद्रीय बैंक ने यह भी कहा कि कुछ चिह्नित जिलों के लिए प्राथमिकता क्षेत्र ऋण को बढ़ाया गया है। इनमें वो जिले शामिल हैं, जहां पहले प्राथमिकता क्षेत्र ऋण की कमी देखने को मिली थी।

छोटे (एक हेक्टेयर से कम जोत) व सीमांत (अधिकतम जोत एक हेक्टेयर) किसानों और कमजोर वर्ग के लिए कर्ज के लक्ष्य को चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जाएगा।

फार्मर्स प्रोड्यूसर्स ऑर्गेनाइजेशन (FPO) और फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनियों (FPC) के लिए कर्ज की सीमा को बढ़ाकर 2 करोड़ रुपए तक कर दिया गया है। इसमें पारंपरिक और गैर पारंपिक साथ ही बागवानी से जुड़े किसानों को भी शामिल किया गया है।

□□

नया अंडा : दिलोदिमाग को रखेगा दुरुस्त कमाई भी होगी डबल

नये अंडे में सेचुरेटेड फैट और कोलेस्ट्रोल की मात्रा है कम, ओमेगा–3 फैटी एसिड से है भरपूर, मोटापे से रखेगा दूर एवं सेहत का भी रखेगा ख्याल।

भारतीय वैज्ञानिकों ने ऐसा स्पेशल पोल्ट्री फूड डिजाइन किया है, जिससे तैयार अंडा सेहत के लिए तो लाभकारी होगा ही, पोल्ट्री फार्म भी दोगुनी कमाई कर सकेंगे। इसमें सामान्य अंडों के मुकाबले हानिकारक सैचुरेटेड फैट और कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम है, जबकि लाभकारी ओमेगा-3 फैटी एसिड पर्याप्त मात्रा में है। दिल, दिमाग और त्वचा के लिए फायेदमंद यह अंड मोटापे से भी दूर रखेगा।

गुरु अंगद देव वेटरनरी एंड एनिमल साइंस यूनिवर्सिटी गडवासू, लुधियाना का दावा है कि यह किसानों की आय बढ़ाने का अच्छा साधन बन सकता है। समुचित ब्रांडिंग होने पर इसे सामान्य अंडे से दोगुने दाम पर बेचा जा सकता है।

मौजूद तत्व	सामान्य अंडा	नया अंडा
ओमेगा-3 फैटी एसिड	60 मि.ग्रा.	350 मि.ग्रा.
इकोसापैटाइनोइक एसिड	20 मि.ग्रा.	100 मि.ग्रा.
अल्फा लिनोलिक एसिड	40 मि.ग्रा.	250 मि.ग्रा.
पोलीअन फैट	0.9 ग्राम	1.35 ग्राम
सेचुरेटेड फैट	2.2 ग्राम	1.5 ग्राम

□□

चिड़ाना में पशुस्वास्थ्य केंद्र

स्वस्थ पशु और खुशहाल किसान के लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन गांव चिड़ाना (सोनीपत) में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित कर रहा है। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य केंद्र आरंभ किया गया है।

इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां उपलब्ध करवाई जाएगी। इसमें कुछ प्रमुख हैं-

- पशुओं के लिए उचित मूल्य पर आयुर्वेदिक औषधियां
- कृषि के लिए उत्कृष्ट जैविक खाद
- पशुओं में थनैला रोग की जांच और उपचार की सुविधा
- पशु पोषण एवं संतुलित आहार
- कृत्रिम गर्भाधान सुविधा
- बेहतर प्रजनन क्षमता
- कृमि जांच आदि

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-0120-7100283

□□

मधुमक्खी पालन को बनाया कमाई का जरिया, करते हैं 200 से 250 कुंतल शहद का उत्पादन

आज मधुमक्खी पालन ने कम लागत वाला कुटीर उद्योग का दर्जा ले लिया है। ग्रामीण भूमिहीन बेरोजगार किसानों के लिए आमदनी का एक साधन बन गया है। मधुमक्खी पालन से जुड़े कार्य जैसे बढ़ईगिरी, लोहारगीरी एवं शहद विपणन में भी रोजगार का अवसर मिलता है ।

किसान की आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहे हैं। कृषि के साथ-साथ पशुपालन, बागवानी आदि को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अनेक सरकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। आज हम ऐसे ही एक शख्स के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं, जिन्होंने प्रगतिशील सोच के साथ न केवल अपनी आमदनी बढ़ाई, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत भी बन गए।

खेती में आमदनी न होने पर दोस्त की सलाह पर मधुमक्खी पालन का व्यवसाय शुरू करने वाले रणवीर सिंह तोमर आज हर साल 200 से 250 कुंतल तक शहद का उत्पादन कर रहे हैं।

मेरठ से लगभग 32 किलोमीटर दूर रजपुरा ब्लाक के मऊखास गांव के रहने वाले रणवीर सिंह तोमर 1984 से पहले खेती करते थे। खेती में कुछ आमदनी नहीं थी, तो उनके मित्र ने सलाह दी क्यों न आप मधुमक्खी पालन करें। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज 45 साल हो चुके हैं मधुमक्खी पालन करते हुए। वो बताते हैं, ''हमारे पास उस समय 12 बीघा खेती थी, जिसमें कुछ मुनाफा हमें मिलता नहीं था, एक साइकिल भी मजदूर आदमी के पास होती है, लेकिन हमारे पास उस समय कुछ नहीं था। आज इसी काम से हमारे पास दो गाड़ियां हैं। अच्छा मकान है। इतना ही नहीं हमने इसी काम से खेती भी खरीद ली है।''

रणवीर सिंह तोमर आगे बताते हैं कि ''हमने 1984 में 10 बॉक्स से मधुमक्खी पालन शुरू किया था। वह भी सरकारी विभाग से मिले थे, उसके बाद उससे जो उत्पादन हुआ। हमने बॉक्स बनाएं और फिर सरकारी अधिकारी ने अपने बॉक्स वापस ले लिए थे, लेकिन आज हमारे पास 1500 से अधिक बॉक्स हैं, जिसमें हम मधुमक्खी पालन करते हैं, साल में 6 से 7 बार शहद का उत्पादन करते हैं, आज हम 200 से 250 कुंतल प्रतिवर्ष शहद बेच देते हैं।

लागत निकालकर हो जाती है 15 से 20 लाख की कमाई

रणवीर सिंह तोमर बताते हैं, ''हम आज इस काम से प्रतिवर्ष 15 से 20 लाख रुपए कमा लेते हैं। सभी खर्च काटकर हमने किराए पर जगह लेकर अलग-अलग साइट लगा रखी है। जहां पर मधुमक्खी पालन करते हैं, ट्रांसपोर्टेशन लोडिंग का खर्चा ज्यादा आता है। उन्हें सबको हटाकर भी अच्छा मुनाफा मिल जाता है।''

कुछ साल पहले शहद का उत्पादन ज्यादा होता था आज कम होता हैं

रणवीर सिंह तोमर आगे बताते हैं कि ''पहले एक बॉक्स से एक कुंतल शहद निकल जाता था। आज उत्पादन बहुत कम होता है। बहुत बड़ा कारण है। क्योंकि पहले आसपास के खेतों में कोई उर्वरक नहीं डालते थे। आज किसान भाई अपनी खेती में जहरीले पेस्टिसाइड डालते हैं, जिससे हमारी मधुमक्खी मर

जाती हैं और उत्पादन भी बहुत कम होता है।''

बरसात के मौसम में मधुमक्खी की ज्यादा देखभाल करनी होती है

रणवीर सिंह तोमर आगे बताते हैं ''सबसे अच्छा उत्पादन गर्मी के महीने में होता है। अच्छा उत्पादन भी मिलता है, लेकिन बरसात के मौसम में मधुमक्खी की देखभाल ज्यादा करनी होती है, क्योंकि वर्षा के समय मधुमक्खी बाहर नहीं जा पाती। इसके कारण उत्पादन में कमी आ जाती है और मधुमक्खी का ध्यान भी रखना पड़ता है ।

दर्जनों लोगों को भी मिला है रोजगार

रणवीर सिंह तोमर बताते हैं कि पहले हमारे पास कम बॉक्स थे, जिससे हम खुद ही काम कर लेते थे, लेकिन आज 15 जगह पर अलग-अलग गांव में मधुमक्खी पालन हो रहा है। दर्जनों से अधिक लोगों को रोजगार भी मिला है और हमें अच्छा लगता है कि हम आज रोजगार देने लायक हुए ।

अन्य राज्यों में भी जाता है शहद, जिसकी है भारी डिमांड

रणवीर सिंह तोमर आगे बताते हैं कि ''हमारा शहद अन्य राज्यों में भी जाता है। लोगों को सीधा साइड से ही मिल जाता है और वह अपने सामने जब शहद निकलता है, तो वहीं से खरीद कर ले जाते हैं। क्योंकि आजकल अच्छी चीजें बहुत कम मिलती हैं। इसीलिए दूर दराज से लोग हमारे यहां शहद लेने आते हैं।''

रणवीर सिंह तोमर आगे बताते हैं कि ''आज सबसे बड़ी समस्या हमारे साथ यह आती है कि जो बड़ी कंपनियां है वह हम से सीधे संपर्क करते हैं और हमारे कम दामों में शहद को खरीदकर ले जाते हैं और अपने ब्रांड से अच्छे दामों में लोगों तक बेच देते हैं, लेकिन हमारे शहद पर लोग विश्वास करते हैं और हम बिना ब्रांड के शहद को बेचते हैं।

AYURVET™

पशुपालकों की लगातार मांग पर फिर से शुरू हुआ आयुर्वेट पशु जगत रेडियो कार्यक्रम

आकाशवाणी

आपकी लगातार आती हुई मांग को देखते हुए आपका चेहता आयुर्वेट पशुजगत कार्यक्रम इस माह से फिर से आरंभ हो गया है।

इस कार्यक्रम को अब आप पूरे भारतवर्ष में कहीं भी रेडियो के साथ-साथ अब अपने मोबाइल पर भी सुन सकते हैं, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:-

चैनल: **इंद्रप्रस्थ चैनल (819 मैगाहट्र्ज)**
एफएम गोल्ड (100.1 मैगाहट्र्ज)

दिन: **प्रति सोमवार**

समय: **सायं 5.20**

पशुजगत कार्यक्रम में किसानों को पशुपालन की उपयोगी जानकारी दी जाती है। इस कार्यक्रम में किसानों द्वारा पशुपालन संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर विशेषज्ञों द्वारा दिए जाते हैं। कार्यक्रम संबंधी जानकारी, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आप अपन हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं:-

आयुर्वेट लिमिटेड,
पोस्ट बॉक्स नं. 9292,
दिल्ली-110092

गायों में कृत्रिम गर्भधारण

-प्रसन्न पाल[1], सोनिका ग्रेवाल[2], ज्योतिमाला साहू एवं अंजली अग्रवाल[3]

आज के समय में किसी भी डेरी फार्म की सफलता, उन्नत दूध उत्पादन करने वाले पशुओं के ऊपर निर्भर करती है। जब किसी मादा को श्रेष्ठ श्रेणी के नर के साथ प्रजनन कराया जाए, तभी श्रेष्ठ श्रेणी के पशु उत्पन्न हो सकते हैं। देशी पशुओं के प्रजनन प्रबंधन को अधिक सफल बनाने के लिए कृत्रिम गर्भधारण प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें नर पशु से वीर्य को एकत्रित करके मादा पशु के गर्भाशय में कृत्रिम रूप से डाला जाता है। भारत में पहला कृत्रिम गर्भधारण संपत कुमारन के द्वारा 1939 में मैसूर डेरी फॉर्म में सफलतापूर्वक किया गया था।

आज के समय में किसी भी डेरी फार्म की सफलता, उन्नत दूध उत्पादन करने वाले पशुओं के ऊपर निर्भर करती है। जब किसी मादा को श्रेष्ठ श्रेणी के नर के साथ प्रजनन कराया जाए, तभी श्रेष्ठ श्रेणी के पशु उत्पन्न हो सकते हैं। देशी पशुओं के प्रजनन प्रबंधन को अधिक सफल बनाने के लिए कृत्रिम गर्भधारण प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें नर पशु से वीर्य को एकत्रित करके मादा पशु के गर्भाशय में कृत्रिम रूप से डाला जाता है। भारत में पहला कृत्रिम गर्भधारण संपत कुमारन के द्वारा 1939 में मैसूर डेरी फॉर्म में सफलतापूर्वक किया गया था।

मद काल के लक्षण

हमें यह जानने की आवश्यकता है कि पशु किस समय मद में आते हैं और पशुओं के मद में आने पर क्या-क्या लक्षण दिखाई देते हैं। क्योंकि पशु की मदस्थिति सही समय पर ना पहचानने एवं मद रहित पशु को कृत्रिम गर्भाधान करने से पशु गर्भित नहीं हो पाता और यह स्थिति पूरे समूह की प्रजनन क्षमता को प्रभावित करती है। उचित रूप से कृत्रिम गर्भधारण करने के लिए पशुपालकों को मद के लक्षण सही समय पर पहचाना अति आवश्यक है। इसीलिए मद के लक्षणों के लिए दुधारू पशुओं को विशेषज्ञ कर्मियों के द्वारा कम से कम प्रतिदिन तीन बार 8 घंटों के अंतराल पर जांच करवानी चाहिए एवं सही समय पर ही प्रजनन करवाना चाहिए। जब पशु मदकाल में होता है, तो उसके संपूर्ण शरीर में विशेष प्रकार के परिवर्तन होते हैं जैसे-

तेज आवाज में रंभाना, बेचैनी बढ़ना, चारा कम खाना, बार-बार मूत्र का त्याग करना, श्लेष्मा झिल्ली का लाल होना, पशु के शरीर का तापमान बढ़ना, पशु की योनि से तरल पारदर्शी स्राव का निकलना, पशु का दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने देना, पशु का अधिक चौकन्ना होना, दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन की कमी होना।

गायों की मदकाल की अवस्था में आने के 12 घंटे बाद ही कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए। अगर पशु प्रातःकाल में मद में आता है, तो कृत्रिम गर्भधारण दोपहर के बाद करना चाहिए और इसी प्रकार अगर दोपहर में आता है, तो अगले दिन कृत्रिम गर्भधारण करना चाहिए।

कृत्रिम गर्भधारण की प्रक्रिया

पशुओं का कृत्रिम गर्भधारण विशेषज्ञ कर्मियों अथवा पशु चिकित्सक के द्वारा ही करवाना चाहिए। सर्वप्रथम वीर्य को 35

से 38 डिग्री सेंटीग्रेड पर 40 सेकंड के लिए द्रवित करना चाहिए। पशु को सही ढंग से नियंत्रित करें, जिससे कि वह तनावपूर्ण स्थिति में ना रहे। कृत्रिम गर्भधारण करने से पहले विशेषज्ञ व्यक्ति को हाथों में दस्ताने पहनने चाहिए। पशु की पूंछ को ऊपर उठी हुई स्थिति में रखते हुए उसके मलाशय को पूर्ण रूप से खाली कर देते हैं। उसके उपरांत वीर्य से भरी हुई कृत्रिम गर्भधारण बंदूक को योनि में डाल देना चाहिए। गर्भाशय ग्रीवा को मलद्वार के रास्ते हाथ से पहले महसूस किया जाता है और फिर कृत्रिम गर्भधारण बंदूक की नोक को गर्भाशय ग्रीवा से गुजार कर बंदूक की पिस्टन को आराम से दबाते हुए वीर्य को गर्भाशय में डाला जाता है।

कृत्रिम गर्भधारण के लाभ

- सांडों को पालने की आवश्यकता नहीं होती।
- सांड की मृत्यु के बाद भी उसका वीर्य उपयोग किया जा सकता है।
- रोग रहित उन्नत गुणवत्ता वाले सांडों का वीर्य प्रयोग करके मादा को नर द्वारा फैलने वाले यौन रोगों से बचाया जा सकता है।
- एक सांड के वीर्य से हजारों गायों को एक ही बार में गर्भ धारण कराया जा सकता है जो कि प्राकृतिक रूप से असंभव है।
- कृत्रिम गर्भधारण दूरदराज के इलाकों में भी किया जा सकता है उसके लिए सांड को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की आवश्यकता नहीं है।
- उत्तम गुणों वाला सांड अगर चोटिल हो जाए तो भी कृत्रिम गर्भधारण विधि द्वारा सांड का वीर्य प्रयोग किया जा सकता है।
- कृत्रिम गर्भधारण विधि द्वारा संकर प्रजाति तैयार की जा सकती है।

कृत्रिम गर्भधारण विधि की सीमाएं

कृत्रिम गर्भधारण के अनेक लाभ होने के बावजूद भी इस विधि की कुछ सीमाएं हैं जो इस प्रकार हैं:-

- कृत्रिम गर्भधारण के लिए विशेष प्रकार के उपकरण और विशेषज्ञ व्यक्ति की आवश्यकता होती है।
- कृत्रिम गर्भधारण में प्रयोग किए जाने वाले उपकरण अगर सही ढंग से कीटाणु रहित ना किए जाए, तो बीमारी आसानी से फैल सकती है और गर्भधारण दर में कमी आ सकती है।
- कृत्रिम गर्भधारण करने के लिए व्यक्ति को पूर्ण रूप से मादा के प्रजनन संबंधी क्षेत्र की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए अन्यथा वह पशु की प्रजनन क्षमता को नुकसान भी कर सकता है।

कृत्रिम गर्भधारण द्वारा गर्भधारण दर बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

- मद के लक्षणों को सही समय पर पहचाने और सही समय पर गर्भाधान कराएं।
- गर्मी से पशु को बचाने का उचित प्रबंध करें।
- खान-पान का ध्यान रखें।
- खनिज लवण आदि पशु को दें।
- बीमारियों से पशुओं का बचाव करें।
- यदि पशु का गर्भपात हो गया हो तो उसे तीन से चार महीने गाभिन न करवाएं तथा उसकी पशुचिकित्सक से जांच कराएं।
- अप्रशिक्षित व्यक्ति से कभी भी कृत्रिम गर्भाधान न करवाएं।

निष्कर्ष

कृत्रिम गर्भधारण एक सरल एवं किफायती तकनीक है। इस तकनीक से अच्छे आनुवंशिक योग्यता वाले बछड़े पाने में मदद मिलती है। अंततः यह तकनीक पशुओं से दूध उत्पादन बढ़ाने में मददगार साबित होगी। जैसा कि उपरोक्त लेख में बताया गया है कि इस तकनीकी में सांड की आवश्यकता नहीं होती इसलिए सांड पालन की लागत भी बच जाती है और सभी प्रकार की श्रेणी के किसान इस तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं और लाभ उठा सकते हैं।

□□

1 पशु शरीर-क्रिया विज्ञान विभाग, भा.कृ.अनु.प., राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, 2 पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग, भा.कृ.अनु.प., राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान

पशुओं में विषाक्तता (जहर) का इलाज

-सवीन भोंगरा

आज हम बात करते हैं विषाक्तता (जहर) की ये केवल गले सड़े चारे से ही फैलता है। यद्यपि इसके और भी बहुत कारण हैं। यदि पशुपालक को इसके बारे में बताते हैं। वो बोलते हैं। हम तो बहुत समय से खिला रहें हैं हमारे पशुओं को कुछ नहीं हुआ। जिसके साथ बनती है वहीं जानें।

चलिए कुछ एक कारण पर नजर डालते हैं।

आर्सेनिक विषाक्तता

इस जहर का कोई इलाज नहीं, केवल बचाव है।

घरेलू पशुओं में यह सामान्य रूप है। यह बड़े पैमाने पर कीटनाशक के रूप में, परजीवी के रूप में, कृन्तकों के लिए एक जहर के रूप में उपयोग किया जाता है और इससे पेरिस ग्रीन (कॉपर आर्सेनाइट), सफेद आर्सेनिक (आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड या सोडियम आर्सेनाइट) के कारण आकस्मिक और आपराधिक विषाक्तता हो सकती है। पेरिस ग्रीन अक्सर होता है विषाक्तता का कारण।

लक्षण

- अचानक उदासीनता हो जाना, लड़खड़ाना, मांसपेशियों का कांपना और मांसपेशियों का हिलना-डुलना।
- श्लेष्म झिल्ली में वृद्धि।
- 100 से ऊपर पल्स, 30 के बारे में श्वसन और तापमान सामान्य या थोड़ा बढ़ा हुआ हो सकता है।
- तेजी से सांस लेना, शूल और कराहना।

उपचार

सबसे प्रभावी एंटीडोट सोडियम थायोसल्फेट है। मौखिक रूप से दिए जाने के लिए 250 मिली पानी में 15 से 30 ग्राम घोल, 10 से 15 मिलीलीटर पानी में 2 से 10 ग्राम अंतःशिरा में। आंतों की ऐंठन और दर्द से राहत के लिए एट्रॉफिन को हाइपोडर्मिक रूप से दिया जा सकता है।

नमक विषाक्तता (सोडियम क्लोराइड)

यह एक सामान्य भोजन है और जहर नहीं है। लेकिन जब इसका अधिक मात्रा में सेवन किया जाता है, तो बीमारी हो सकती है।

लक्षण

- मुख्य लक्षण डायरिया और दूध का बहाव कम होना है।
- जब अत्यधिक मात्रा में सेवन किया गया है, तो भूख में कमी, ओरल म्यूकोसा, कोलिक, पॉल्यूरिया और अंधापन की पूर्णता और सूखापन हो सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ लक्षण कमजोरी और हिंद भागों या सामान्य पक्षाघात के रूप में चिह्नित हैं।
- गैस्ट्रोएंटेराइटिस, एब्सोमस का म्यूकोसा सूजन और रक्तस्रावी है।
- भूख चमकीली लाल और पतली हो सकती है।

उपचार

- दूध में मांड़ या बिस्मथ सबनेट्रेट दें।
- कैफीन सोडियम बेंजोएट का कपूरयुक्त तेल या अमोनियम कार्बोनेट दें।

पशुधन विशेषज्ञ, हरियाणा

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रुकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

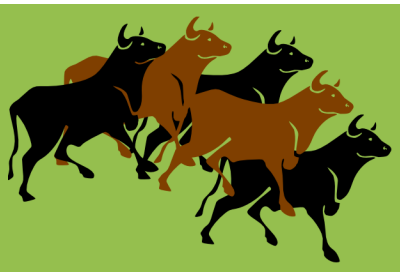

खोज खबर

कोरोना संकट के बावजूद खरीफ की फसल की बुवाई पिछले साल के मुकाबले सात फीसद ज्यादा: मोदी

आकाशवाणी पर मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 68वीं कड़ी में अपने विचार साझा करते हुए श्री नरेंद्र मोदी ने

कहा कि कोरोना जैसी महामारी से पैदा हुई असाधारण परिस्थितियों के बावजूद देश में खरीफ की फसल की बुवाई पिछले साल के मुकाबले सात फीसद ज्यादा हुई है। इसके लिए मैं किसानों को नमन करता हूं। उनकी शक्ति से ही जीवन और समाज चलता है। उन्होंने कहा कि धान की रोपाई इस बार लगभग 10 प्रतिशत, दालें लगभग पांच प्रतिशत, मोटे अनाज लगभग तीन प्रतिशत, तिलहन लगभग 13 प्रतिशत और कपास की लगभग तीन प्रतिशत ज्यादा बुवाई की गई है। उन्होंने आगे कहा, "मैं, इसके लिए देश के किसानों को बधाई देता हूं। उनके परिश्रम को नमन करता हूं।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि आम तौर पर यह समय उत्सव का होता है और जगह-जगह मेले लगते हैं तथा धार्मिक पूजा-पाठ होते हैं। कोरोना के इस संकट काल में लोगों में उमंग तो है, उत्साह भी है, हम सबके मन को छू जाए वैसा अनुशासन भी है। नागरिकों में दायित्व का एहसास भी है। लोग अपना ध्यान रखते हुए, दूसरों का ध्यान रखते हुए, अपने रोजमर्रा के काम भी कर रहे हैं।

उजमा बैठक और किसान चैंबर्स आफ कॉमर्स ने पारित किए 15 प्रस्ताव सभी प्रकार की फसलों पर एमएसपी की मांग

भारत सरकार द्वारा लाये गए तीन नए कृषि अध्यादेशों के अवलोकन के लिए उजमा बैठक ने किसान चैंबर ऑफ कॉमर्स के सहयोग से ऑनलाइन कांफ्रेंस की। इस दौरान देश-विदेश के कृषि एक्सपर्ट्स, अर्थशास्त्री, साइंटिफिक और कानून एक्सपर्ट्स, कृषि समाज के कार्यकर्ता और खाप प्रतिनिधियों ने 15 प्रस्ताव पास किए। प्रस्ताव में कहा गया कि मंडी हो या कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग, फसल का एम.एस.पी. हर सूरत में सुनिश्चित हो। उपज की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर हो। चाहे खरीद मंडी परिसर में हो या किसी अन्य स्थान पर। सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य का प्रावधान हो। न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे खरीद अपराध घोषित हो। फसलों का डेढ़ गुना मूल्य स्वामीनाथन फॉर्मूला के अनुसार घोषित हो जिसके अन्तर्गत सी2 फैक्टर की सही तरीके से गणना की जाए।

वहीं मांग की गई कि आपातकालीन स्थिति में निर्यात स्टॉक भी देश की जनता के लिए देश हित में उपलब्ध हो। आवश्यक वस्तु अधिनियम के अन्तर्गत काला बाजारी रोकने के उद्देश्य से स्टॉक लिमिट लागू की जाए। जैसे कि पेरिशेबल वस्तुओं के

स्टॉक की अनुमति 100% प्राइस बढ़ोतरी तक नहीं अपितु 50% तक रखी जाए व ऐसे ही नॉन-पेरिशेबल की 50% की बजाए 25% रखी जाए। किसी भी खरीद संबंधी वाद-विवाद से बचने के लिए त्रिपक्षीय समझौता हो, जिसमें किसान, सरकार/सरकार का प्रतिनिधि और खरीदने वाला पक्ष शामिल हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सरकार के पूर्व कृषि मंत्री सोमपाल शास्त्री ने की।

नई शिक्षा नीति के माध्यम से कृषि क्षेत्र को उन्नत व रोजगारोन्मुखी बनाएं-श्री तोमर

देश में नई शिक्षा नीति के तहत कृषि शिक्षा को बेहतर बनाने के संबंध में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर के मुख्य आतिथ्य में देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, डीन सहित कृषि शिक्षा से जुड़े सैकड़ों विद्वानों ने व्यापक विचार-विमर्श

किया। श्री तोमर ने कहा कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से कृषि क्षेत्र को उन्नत बनाया जाएं। इस संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एक समिति बनाएं, जो अपनी सिफारिशें दे। कृषि का क्षेत्र महत्वपूर्ण व विविधताओं से परिपूर्ण है। देश की बड़ी आबादी कृषि क्षेत्र में रोजगार पाती है। उत्पादन की दृष्टि से भी यह बड़ा क्षेत्र है, इसलिए इसे उन्नत बनाने हेतु नई शिक्षा

नीति का समावेश कैसे हो सकता है, यह विचार-विमर्श शिक्षाविदों के साथ हो रहा है। सरकार का प्रयत्न रहा है कि नए युग के साथ हमें भी अपनी नीतियों-नियमों में परिवर्तन करते रहना चाहिए। पीएम-किसान में 93 हजार करोड़ रुपए किसानों के खाते में भेजे जा चुके हैं। नए अध्यादेश लाएं गए, किसान अब अपनी उपज मनचाही कीमत पर, मनचाहे स्थान पर बेच सकते हैं, जिसमें मंडी के बाहर उन्हें टैक्स भी नहीं लगेगा। इसी तरह, कांट्रेक्ट फार्मिंग में उपज बिक्री व लाभ-हानि में किसानों के भय दूर किये हैं। निजी निवेश गांवों-खेतों तक पहुंचेगा। प्राकृतिक प्रतिकूलता पर किसानों को मुश्किलें आती हैं, इसलिए भी आवश्यक है कि कृषि शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम जोड़े जाएं, जिससे नई पीढ़ी कृषि क्षेत्र को टेक्नालाजी से जोड़ने में कामयाब हो सकें व मुनाफे के साथ कृषि क्षेत्र आकर्षण का केंद्र बन सकें। एक लाख करोड़ रुपए के कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड सहित पशुपालन, हर्बल खेती, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा अन्य सम्बद्ध क्षेत्रों के लिए भी सरकार ने विशेष पैकेज दिया है। इनसे कृषि क्षेत्र की जरूरतें पूरी होगी, रोजगार के अवसरों का सृजन होगा, किसान अपनी उपज को अच्छे मूल्य के लिए रोक सकेंगे, प्रोसेसिंग कर सकेंगे, एफपीओ के माध्यम से भी नए आयामों से जुड़ सकेंगे। आज डीबीटी से पैसे सीधे लाभार्थियों के खातों में जमा हो रहे हैं। मनरेगा में भी मजदूरों का पेमेंट सीधे खातों में जमा हो रहा है। शिक्षा नीति भी समयानुकूल, रोजगारोन्मुखी, कृषि में उत्पादकता बढ़ाने वाली, तकनीक का प्रवेश कराने वाली तथा वैश्विक मापदंडों को पूरा करने वाली होने पर जोर दिया है।

वेबिनार में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला व श्री कैलाश चौधरी, वि.वि. अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री भूषण पटर्वधन, भारतीय विश्वविद्यालय संघ महासचिव पंकज मित्तल, कुलपतियों, डीन व वरिष्ठ प्राध्यापकों ने विचार रखें। आईसीएआर के महानिदेशक डा. त्रिलोचन महापात्र ने संचालन किया।

मध्यप्रदेश में उच्च गुणवत्ता वाले गौ-भैंस वंशीय पशुओं की होगी वृद्धिः प्रेमसिंह पटेल

मध्य प्रदेश के पशुपालन मंत्री श्री प्रेमसिंह पटेल ने कहा कि प्रदेश में गौ-भैंस वंशीय पशुओं की नस्ल सुधार एवं गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के प्रयास प्रारंभ किये गये हैं। राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत एक अगस्त 2020 से 31 मई 2021 तक कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम चलाया जाएगा। इससे प्रदेश में अच्छी नस्ल के पालतू पशुओं की संख्या में वृद्धि होगी और पशुपालकों की आय भी बढ़ेगी। कार्यक्रम क्रियान्वयन के लिये प्रभावी रणनीति तैयार कर विभागीय अधिकारियों को सक्रियता से कार्य करने के निर्देश दिये हैं। कार्यक्रम में प्रत्येक जिले के चयनित 500 गाँव में से प्रत्येक गाँव में 100 गौ-भैस वंशीय पशुओं का कृत्रिम गर्भाधान किया जायेगा। इससे 50 हजार उच्च नस्ल वाले दुधारू पशुओं की प्राप्ति होगी। इस महत्वाकांक्षी नस्ल सुधार कार्यक्रम से आगे आने वाली पीढ़ियों को भी उच्च गुणवत्ता के दुधारू पशु मिल सकेंगे। यू.आई.डी. टैग लगाकर और पशु का पंजीयन कर जानकारी सॉफ्टवेयर पर अपलोड की जायेगी। कृत्रिम गर्भाधान से गर्भधारण सुनिश्चित करने के लिये मार्गदर्शिका और डॉयरेक्टरी केन्द्रीय वीर्य संस्थान तथा राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम की वेबसाइट पर उपलब्ध है। श्री पटेल ने बताया कि कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता को प्रति कृत्रिम गर्भाधान के लिये 50 रुपये और प्रति वत्स उत्पादन प्रोत्साहन राशि के रूप में 100 रुपये दिये जायेंगे। पशुपालन मंत्री श्री पटेल ने पशुपालकों से कार्यक्रम का लाभ लेने की अपील की है।

□□

आयुर्वेट डेस्क

पशु के प्रसव (ब्याने) की प्रक्रिया

-डॉ मुकेश कुमार श्रीवास्तव[1] और डॉ संजय कुमार मिश्र[2]

पशुओं में ब्याने के संकेत को जानना पशुपालकों के लिए जरुरी है, मादा पशुओं के ब्याने के संकेतों को समझने से पशुपालक को यह जानने में मदद मिलती है कि पशु चिकित्सा सहायता की कब आवश्यकता होगी और उनका निदान कैसे होगा। पशु यदि सामान्य अवस्था में नहीं है, तो वह संकेतों के माध्यम से बताते है। ब्याने की विभिन्न अवस्थाओं का भी पूर्व में ही कुछ संकेत मिल जाता हैं।

प्रसव एक सामान्य गर्भावस्था अवधि के पूरा होने पर पूरी तरह से विकसित बच्चे के गर्भाशय से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। विभाजन यह पशुपालकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है, क्योंकि इसके बाद उन्हें दूध या पशु की बिक्री और उसके बछिया/बछड़ों से लाभ प्राप्त होगा। इसलिए, उचित देखभाल के लिए अग्रिम रूप से तैयारी की जानी चाहिए और आंशिक समस्याओं को कम करने के लिए प्रसव के दौरान पर्याप्त सतर्कता रखी जानी चाहिए।

पशुओं में ब्याने के संकेत को जानना पशुपालकों के लिए जरुरी है, मादा पशुओं के ब्याने के संकेतों को समझने से पशुपालक को यह जानने में मदद मिलती है कि पशु चिकित्सा सहायता की कब आवश्यकता होगी और उनका निदान कैसे होगा। पशु यदि सामान्य अवस्था में नहीं है, तो वह संकेतों के माध्यम से बताते है। ब्याने की विभिन्न अवस्थाओं का भी पूर्व में ही कुछ संकेत मिल जाता हैं।

प्रसव की सामान्य प्रक्रिया और चरण

पशुपालक जब भी पशु का गर्भधान करवाएं हमेशा गर्भाधान की तारीख लिखकर रखें और अगर पशु पुनः मद में नहीं आता है, तो गर्भाधान के 3 माह पश्चात् गर्भ की जाँच

अवश्य करवाएं। यदि गर्भाधान सही हुआ है, तो उसके ब्याने का समय का अनुमान लगाया जा सकता हैं, क्योंकि गाय का औसत गर्भकाल 280-290 दिन एवं भैंस का 305-318 दिन होता है। ब्याने के संकेतों को समझने से पशुपालक को यह जानने में मदद मिलती है कि पशु चिकित्सा सहायता की कब आवश्यकता होगी। ब्याने के संकेतों को मूल रूप से 3 अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है।

(1) ब्याने से पहले (ब्याने से 24 घंटे पहले)-प्रथम चरण

(2) प्रसव-(ब्याने के 30 मिनट पहले से लेकर 4 घंटे बाद तक)-द्वितीय चरण

(3) गर्भनाल/जेर का निष्कासन-(ब्याने के 3-12 घंटे बाद)-तृतीय चरण

प्रथम चरण (गर्भाशय ग्रीवा का चौड़ा होना)

प्रसव के पहले चरण को तैयारी का चरण माना जाता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इस चरण के दौरान मादा अपने को प्रसव के लिए तैयार करती है। इस चरण को 2 से 24 घंटों के बीच माना जाता है, लेकिन केवल गर्भाशय ग्रीवा के चौड़े होने के साथ इसकी पुष्टि की जा सकती है, लेकिन गर्भाशय की

मांसपेशियों की गतिविधि अभी भी शांत रहती है। प्रथम चरण में पूरी तरह से किसी का ध्यान नहीं जाने की संभावना रहती है, लेकिन व्यवहार संबंधी परिवर्तन हो सकते हैं जैसे अन्य पशुओं से अलगाव या बेचैनी, ऐसे समय में पशु की भूख खत्म हो जाती है और वह खाने में दिलचस्पी नहीं लेता। पशु पेट पर लातें मारता है या अपने पार्श्व/बगलों को किसी चीज से रगड़ने लगता है। इस अवस्था के पशुओं को ''बछड़ा देने को बीमार'' की संज्ञा दी जाती है। इसके अलावा कुछ लक्षण जैसे कि पूंछ का ऊंचा उठाना, योनि से श्लेष्म निर्वहन में वृद्धि। पेल्विक लिगामेंट्स की शिथिलता (नरमी) भी स्पष्ट हो सकती है, जिससे पूँछ के प्रत्येक तरफ धँसा हुआ दिखाई देता है। योनि बहुत ढीली, आकार बड़ा एवं मांसल और शिथिल हो जाती है, शरीर के तापमान में कमी आती है। इस चरण में अयन बहुत बड़ा हो जाता है। चूचुक में कोई झुर्रियां नहीं होंगी, यह एक छोटे कोण पर अकड़ी हुई होगी, लेकिन कभी कभी यह लक्षण थोड़ा धोखा देने वाला हो सकता है, क्योंकि कभी-कभी गाय वास्तविक समय से महीनों पहले ये लक्षण दिखाना शुरू कर देती है। यदि पशु भारी उत्पादक क्षमता वाला है, तो कभी-कभी दूध थोड़ा बाहर निकलना शुरू हो जाता है, लेकिन इस समय दूध को निकालना नहीं चाहिए।

द्वितीय चरण (शिशु का वास्तविक प्रसव)

इस चरण की शुरुआत में बच्चा मय झिल्ली के श्रोणि कुल्या (पेल्विक कैनाल) में आ जाता है, और शिशु के पूर्ण जन्म के साथ चरण समाप्त होता है। यदि प्रक्रिया प्राकृतिक रूप के ठीक चल रही है, तो अगले घंटे के भीतर गाय के पीछे एक पानी की थैली (एलेंटोकोरियन) दिखाई देंगी, जिसके तुरंत बाद दूसरा बैग (एमनिओन) निकलता है, जिसमें बछड़े का सिर और दो सामने वाले पैर होते है। यदि बछड़े या बछिया की स्थिति सामान्य है, तो पानी का थैला फटने के 30 मिनट के अंदर पशु बछड़े को जन्म दे देता है। प्रथम बार ब्याने वाली बछड़ियों में यह समय 4 घंटे तक हो सकता है। पेट की मांसपेशियों के संकुचन और गर्भाशय के संकुचन धीरे-धीरे गर्भाशय ग्रीवा के माध्यम से और योनि के माध्यम से बछड़े को बाहर निकालते है। बछड़ा अगले पैरो को विस्तारित करते हुए सिर को आगे की ओर लाता है, और जैसे ही सिर और पसलियां गर्भाशय ग्रीवा से बाहर आती हैं, बछड़ा हवा में साँस लेना शुरू कर देता है और जन्म प्रक्रिया के दौरान फेफड़े से बलगम को साफ करना शुरू कर देता है। एक बार जब बछड़ा या बछिया पूरी तरह से योनि से बाहर हो जाते हैं, तो गाय के चलने से गर्भनाल टूट जाती है। पशु खड़े खड़े या बैठकर ब्या सकता है। यदि पशु को प्रसव पीड़ा शुरु हुए एक घंटे से ज्यादा समय हो जाएँ और पानी का थैला दिखाई न दे तो तुरंत पशु चिकित्सा सहायता बुलानी चाहिए। सामान्यतः यह चरण 2 से 5 घंटे तक रहता है।

तीसरा चरण(प्लेसेंटा या भ्रूण की झिल्लियों/ जेर का बाहर आना)/सफाई का चरण

लगातार हो रहे गर्भाशय के संकुचन से भ्रूण की झिल्लियां बाहर निकलती है, मवेशियों में यह सामान्य रूप से 8 से 12 घंटे से कम समय में होता है। यदि जेर 12 घंटे के बाद भी बाहर नहीं आता है तो उन्हें प्रतिधारित माना जायेगा (रेटेंसन ऑफ प्लेसेंटा)। पहले इसे हाथ से "अनबटनिंग" करके हटाना आवश्यक माना जाता था। लेकिन हाथों के द्वारा निष्कासन गर्भाशय के स्वास्थ्य और भविष्य की गर्भाधान दर के लिए हानिकारक हो सकता है। प्रतिजैविक दवाओं का प्रयोग आमतौर पर संक्रमण से रक्षा करेगा और जेर 4 से 7 दिनों में बाहर हो जाता है। ध्यान देना चाहिए कि गाय अपने जेर को खाने न पाए, साथ ही इसे मांसाहारी पशुओं से दूर रखना चाहिए।

प्रसव के समय ध्यान देने वाली बातें

- ब्याने की अवस्था में पशुपालक को दूर से निगरानी करनी चाहिए, क्योंकि नजदीक होने से पशु का ध्यान बंट सकता है तथा ब्याने में देरी अथवा बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- ब्याने से पहले बिछावन बदल देनी चाहिए और जर्मरहित वातावरण प्रदान करना चाहिए। ब्याने के स्थान को समय पूर्व फिनाइल घोल से अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए।

- यदि ब्याने में किसी प्रकार की बाधा दिखाई पड़े, तो ही सहायता करनी चाहिए।
- यदि प्रसव पीड़ा की शुरुआत के दो घंटे बाद भी बच्चा बाहर नहीं निकला है, तो योनि मार्ग में बच्चा फंसने की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- आमतौर पर पशुओं में ब्याने के 4-6 घंटे के अन्दर जेर अपने आप बाहर निकल आती है, परन्तु अगर ब्याने के 12 घंटे के बाद भी जेर नहीं गिरती, तो उस स्थिति को जेर का रुकना अथवा रेटेंसन ऑफ प्लेसेंटा कहा जाता है। ऐसी स्थिति में भी नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- जेर जैसे निकल कर गिरे, उसे तुरंत हटाकर कहीं दूर गड्ढे में गाड़ देना चाहिए, अन्यथा पशु जेर को खा लेते हैं, जिसका दुष्पगभाव पशु के स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन पर पड़ता है।
- कभी भी रुकी हुई गर्भनाल को ताकत लगाकर नहीं खींचे, इससे तीव्र रक्तस्राव हो सकता है और कभी-कभी पशु की मौत भी हो सकती है।

□□

1 सहायक आचार्य, पशु औषधि विज्ञान विभाग, दुवासु, मथुरा
2 पशु चिकित्साधिकारी, चौमुहा, मथुरा, पशु पालन विभाग, उत्तर प्रदेश

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
दूरभाष: 91-120-7100201

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

500 मि.ली. 1 लीटर

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

कीटॉसिस/ऐसीटोनीमियां

कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव

–डॉ संजय कुमार मिश्र[1] एवं डॉ मुकेश कुमार श्रीवास्तव[2]

बरसात एवं सर्दी में पशु को अधिक मात्रा व अधिक गुणवत्ता वाला चारा दाना खाने को मिलता है। इससे दुग्ध उत्पादन बढ़ने से पशु पर तनाव बढ़ जाता है और कीटॉसिस हो जाता है। यदि ब्याने के बाद पशु को कम मात्रा में व कम गुणवत्ता वाला चारा दाना दिया जाए तो भूख के कारण कार्बोहाइड्रेट व चर्बी या वसा की मेटाबॉलिज्म में गड़बड़ से ब्याने के बाद कीटॉसिस हो जाता है।

यह एक चपापचई रोग है, जो पशु के ब्याने के बाद कुछ दिनों से लेकर कुछ सप्ताह में होता है। इसमें रक्त में ग्लूकोज की कमी एवं कीटोन बॉडीज की अधिकता तथा मूत्र में कीटोन बॉडीज का उत्सर्जन होता है जिसके फलस्वरुप शरीर का वजन कम हो जाता है, दुग्ध उत्पादन भी कम हो जाता है। ऐसी स्थिति शरीर में कार्बोहाइड्रेट व वोलेटाइल फैटी एसिडस के मेटाबोलिज्म में गड़बड़ी से उत्पन्न होती है। वसा एवं कार्बोहाइड्रेट के पाचन व वितरण में असंतुलन से ही यह रोग होता है।

कारण

यह रोग प्रायः ब्याने के बाद गाय, भैंस एवं भेड़ में होता है जिन की उत्पादन क्षमता अधिक होती है अतः उन्हें आहार भी अधिक मिलता है और पशु पूरे दिन घर में बंधे रहते हैं अर्थात् व्यायाम नहीं मिलता है या चरने बाहर नहीं जाते हैं।

कीटॉसिस की संभावना तीसरे व उसके बाद के ब्यांत में अधिक होती है। कभी-कभी गर्भावस्था के दौरान अंतिम महीनों में भी हो सकता है।

देसी नस्लों की गायों में कीटॉसिस नहीं के बराबर होता है परंतु संकर नस्ल के पशुओं में अधिक पाया जाता है।

यह रोग शरीर में कार्बोहाइड्रेट के मेटाबोलिजिम में गड़बड़ी से कार्बोहाइड्रेट की कमी से हाइपोग्लाइसीमिया होने के कारण होता है। गर्मी में पशु को अधिकतर कम मात्रा व कम गुणवत्ता वाला चारा मिलता है ऐसे में शरीर की आवश्यक क्रियाओं के संचालन हेतु वसा का ङ्कयोग अधिक होता है, जिससे कीटोन बॉडीज बनते हैं और पशु को कीटॉसिस हो जाता है।

बरसात एवं सर्दी में पशु को अधिक मात्रा व अधिक गुणवत्ता वाला चारा दाना खाने को मिलता है। इससे दुग्ध उत्पादन बढ़ने से पशु पर तनाव बढ़ जाता है और कीटॉसिस हो जाता है। यदि ब्याने के बाद पशु को कम मात्रा में व कम गुणवत्ता वाला चारा दाना दिया जाए, तो भूख के कारण कार्बोहाइड्रेट व चर्बी या वसा की मेटाबॉलिज्म में गड़बड़ से ब्याने के बाद कीटॉसिस हो जाता है।

यदि ब्याने के बाद पशु मेट्राइटिस, मैस्टाइटिस, दर्द या अन्य कारणों से कम खाता है। भले ही उत्तम गुणवत्ता का अधिक चारा दाना भी रखा जाए, तो भी पशु नहीं खाता है जिससे कीटॉसिस हो जाता है। कभी-कभी कीटॉसिस और मिल्क फीवर अर्थात् दुग्ध ज्वर साथ-साथ हो जाते हैं।

लक्षण

लक्षणों के आधार पर कीटॉसिस दो प्रकार की होती है:-

पाचक प्रकार की कीटॉसिस:

अधिकतर पशुओं में यही अवस्था पाई जाती है, जिसमें पशु का पाचन तंत्र का कार्य अनियंत्रित, दुग्ध उत्पादन में कमी तथा अवसाद होना। पशु घास भूसा तो खाता है, लेकिन दाना नहीं खाता है परंतु कुछ दिनों बाद तो किसी भी प्रकार का आहार एवं पानी नहीं लेता है। इसी के साथ पाइका के कारण पशु अखाद्य चीजें खाने की चाह रखता है। पशु का वजन अचानक कम हो जाता है तथा चमड़ी के नीचे की चर्बी काफी कम हो जाने से पशु काफी कमजोर दिखाई देता है। दूध में भी अचानक भारी कमी हो जाती है, पशु सुस्त एवं चल फिर भी नहीं पाता है। कठोर मिंगनी के रूप में म्यूकस से लिपटा हुआ गोबर आता है। शरीर का तापमान, नाड़ी की गति तथा श्वसन सामान्य होता है। कीटोन बॉडीज की मीठी सिरके जैसी विशेष गंध श्वास, दूध एवं मूत्र से आती है। आंखें सिकुड़ जाती हैं और फिर सिर थोड़ा नीचे रखकर एक ही तरफ रहता है। योनि मार्ग से स्राव निकलता है।

लगभग 1 महीने में पशु स्वतः ही ठीक हो जाता है, परंतु पहले की तरह दूध की अधिक मात्रा वापस प्राप्त नहीं होती है। इस रोग में पशु मरता नहीं है।

स्नायुविक प्रकार की कीटॉसिस

- पशु पैरों को क्रास करते हुए गोलाकार घूमता है, जो इसका विशिष्ट लक्षण है। पशु सिर दीवार पर दबाता है अथवा नीचे लटका रहता है।
- पशु बिना उद्देश्य इधर-उधर चलता है ऐसा लगता है जैसे वह अंधा हो गया हो।
- पशु बार-बार त्वचा व अन्य अखाद्य वस्तुओं को चाटता है। अधिक लार के साथ पशु मुंह से चबाने जैसी आवाज करता है।
- पशु में टिटनेस के दौरे के लक्षण नजर आते हैं, जिससे पशु को शारीरिक चोट भी लग सकती है। स्नायुविक लक्षण लगभग 1 घंटे तक रहते हैं तथा आठ-दस घंटे बाद फिर से प्रकट होते हैं।

उपचार

उपचार का मुख्य उद्देश्य रक्त में शर्करा का स्तर बराबर करना ताकि कीटोन बॉडीज का सामान्य उपयोग हो सके और वह दूध या मूत्र में नहीं निकलें।

- डेक्सट्रोज 25% इंजेक्शन की 500 से 1000 एमएल इंट्रावेनस विधि से दे। इसके पश्चात् रक्त में ग्लूकोज का स्तर सामान्य बना रहे। इसके लिए पशु को कुछ दिनों तक गुड़ खिलाते रहे।
- इंजेक्शन बेटामेथासोन या डेक्सामेथासोन काफी लाभदायक होते हैं। 80 एमजी इंट्रावेनस या इंटरमस्कुलर विधि से दें यदि 1 दिन से आराम नहीं होता है तो दूसरे दिन भी लगाएं।
- सोडियम प्रोपियोनेट 100 से 200 ग्राम प्रतिदिन कम से कम 3 दिन तक खिलाएं।

- कोएंजाइम ए-सिस्टीयामीन, 750 एमजी इंट्रावेनस 3 दिन के अंतराल के बाद कुल 3 इंजेक्शन लगाएं।
- इंजेक्शन लिवर एक्सट्रैक्ट 10 एम एल इंटरेमस्कुलर विधि से एक दिन छोड़कर कुल 3 बार लगाएं।

कीटॉसिस की रोकथाम

- गर्भावस्था के दौरान अधिक वसा वाला आहार खिलाकर उसको मोटा नहीं बनने देना चाहिए।
- गर्भित गाय भैंस को भूखा नहीं रखना चाहिए। उन्हें संतुलित आहार देना चाहिए।
- गर्भित गाय भैंस के आहार में खनिज लवण अवश्य देवें।
- गर्भावस्था के दौरान मक्का एवं गुड़ जैसे आहार भी देना चाहिए, क्योंकि यह आसानी से पचते हैं और रक्त में ग्लूकोज के स्तर को सामान्य बनाए रखते हैं।

□□

1.पशु चिकित्सा अधिकारी चौमुहां मथुरा, उ.प्र.,
2. सहायक आचार्य एवं प्रभारी पशु औषधि विज्ञान विभाग, दुवासु, मथुरा, उ.प्र.

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं
कीटोरोक अपनाएं

AYURVET™

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. मेरी गाय का दूध उबालने पर फट जाता है। उसके कृत्रिम गर्भाधान को भी चार महीने हो गए हैं। क्या करें?
रमेश, बादली

उत्तर : आपके पशु के कृत्रिम गर्भाधान को चार महीने हो गए हैं। पहले तो आप उसका परीक्षण करवाएं कि वह गाभिन है या नहीं। यदि गाभिन है तो उसकी सेवा करें, परंतु यदि गाभिन नहीं है तो पशु चिकित्सा अधिकारी से उसका परीक्षण करवाकर उसका इलाज करवाएं। जहां तक दूध की बात है आपके पशु को सब-क्लीनिकल थनैला है। इसमें दूध ठीक निकलता है, उसका रंग भी साफ होता है। देखने में तो बिल्कुल ठीक लगता है, परंतु उबालने पर फट जाता है। अभी आप चारों थनों का दूध अलग-अलग निकालें। आप दूध को अलग-अलग उबालें। आप देखेंगे कि तीन थनों का दूध नहीं फटेगा और एक थन का दूध फटेगा। आप तीन थनों के दूध का इस्तेमाल करें। अभी आप अपने पशु को-

•पेट के कीड़ों की दवाई दें।

•पशु का दूध निकालने के बाद थनों को साफ पानी से साफ करें। साफ कपड़े से थनों को साफ करके उस पर दिन में दो बार समुचित मात्रा में मैस्टीलेप जैल का लेप 5 दिनों तक करें।

•आयुमिन वी-5 खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन ताउम्र खिलाएं।

प्र. मेरी गाय की प्रसूति दो महीने पहले हुई है। प्रसूति के बाद वह ठीक थी, परंतु तीन-चार दिन से कम खा रही है। क्या करें?
राजदीप, सोनीपत

उत्तर : आप अपनी गाय की जांच पशु चिकित्सा अधिकारी से करवाएं। आपको गाय की जांच के बाद पता लगेगा कि उसको बुखार है या नहीं। यदि बुखार होगा तो उसे

•इंजेक्शन स्ट्रेपटोपैंसिलिन 2.5 ग्राम आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन मैलोनैक्स प्लस 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन बीकोम-एल 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•मलेड़ा 15 ग्राम व गुड़ 50 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार सात दिन खिलाएं।

अगर आपके पशु को बुखार नहीं है, तो शायद आपका पशु नेगेटिव एनर्जी बैलेंस में है। तब आप अपने पशु को :-

•इंटालाइट एक लीटर आई/वी लगवाएं। यह शायद दो-तीन दिन लगवाना पड़े।

•इंजेक्शन न्यूरोकसिन-एम 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन टी-फोस 10 एमएस आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•मलेड़ा 15 ग्राम व गुड़ 50 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार सात दिन लगवाएं।

•कीटोरोक 200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार 2 दिनों तक दें। उसके बाद अगले 2 दिनों तक 100 मि.ली. दिन में एक बार दें।

□□

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET

मैस्टीलेप के फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
- स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
- थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं

मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

विश्व पशु कल्याण दिवस-4 अक्टूबर

WORLD ANIMAL DAY
OCTOBER 4

विश्व पशु कल्याण दिवस एक अन्तराष्ट्रीय दिवस है, जोकि प्रतिवर्ष 4 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिन असीसी के सेंट फ्रांसिस का जन्मदिवस भी है, जोकि पशुओं के महान संरक्षक थे। इस दिवस का आयोजन 1931 ईस्वी में विज्ञानशास्त्रियों के सम्मलेन में इटली के शहर फ्लोरेंस में शुरू हुआ था। विश्व पशु कल्याण दिवस का मूल उद्देश्य पशु कल्याण मानकों में सुधार करना, व्यक्तियों, समूह, संगठनों का समर्थन प्राप्त करना और पशुओं के प्रति प्यार प्रकट करना, ताकि उनका जीवन सक्षम और बेहतर हो सके।

विश्व पशु कल्याण दिवस समारोह: यह एक महत्वपूर्ण दिवस है। यह विविध माध्यमों से हमें कई चीजों को याद दिलाता है, जिसमें पशु हमारे जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करते हैं। इस दिवस को ढेर सारे दिवसों का आयोजन किया जाता है अर्थात् जैसे विश्व पशु कल्याण अभियान, पशुओं के लिए बचाव आश्रयों का उद्घाटन, और फंड जुटाने से सम्बंधित कार्यक्रमों का आयोजन इत्यादि। इसके अलावा, स्कूल और कालेजों में भी वन्य जीवों से जुड़ी ढेर सारी जानकारियों को टीवी और कंप्यूटर के माध्यम से साझा किया जाता है। कई संगठनों के द्वारा पशुओं के लिए आश्रय के निर्माण का कार्यक्रम भी स्वयंसेवको द्वारा प्रायोजित

किया जाता है।

पशु कल्याण के लिए कानून: पशु कल्याण के लिए अनेकों कानूनों और अधिनियमों की भी व्यवस्था की गयी है। जैसे "पशु क्रूरता अधिनियम 1835" जोकि विश्व में पशुओं के सन्दर्भ में प्रथम अधिनियम है, जिसकी स्थापना ब्रिटेन में की गयी थी। इसके पश्चात "पशु संरक्षण अधिनियम 1911" प्रकाश में आया। इसके परिणामस्वरूप पशुओं की रक्षा हेतु "पशु कल्याण अधिनियम, 1966" नामक अमेरिकी राष्ट्रीय कानून प्रकाश में आया। भारत में, पशुओं की सुरक्षा के लिए "जानवरों के प्रति क्रूरता की रोकथाम अधिनियम 1966" को लाया गया।

ब्रिटेन में, 'पशु कल्याण अधिनियम 2006" ने पशु कल्याण के सन्दर्भ में अनेक समेकन का कार्य किया। □□

16 अक्टूबर : विश्व खाद्य दिवस

विश्व में आज भी करोड़ों लोग भुखमरी के शिकार हैं। बात चाहे विकासशील देशों की हो या विकसित देशों की, सब जगह हालात कमोबेश एक समान ही हैं। खाद्यान्न की समस्या को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 16 अक्टूबर 1945 को विश्व खाद्य दिवस मनाने की शुरुआत की थी, जो अब भी जारी है। संयुक्त राष्ट्र ने 16 अक्टूबर, 1945 को रोम में "खाद्य एवं कृषि संगठन" (एफएओ) की स्थापना की। कांफ्रेस ऑफ द फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन (एफएओ) ने वर्ष 1979 से विश्व खाद्य दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विश्व भर में फैली भुखमरी की समस्या के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ाना और भूख, कुपोषण और गरीबी के खिलाफ संघर्ष को मजबूती देना था। 1980 से 16 अक्टूबर को 'विश्व खाद्य दिवस' का आयोजन शुरू किया गया।

हर साल अलग- अलग थीम के साथ मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था– दुनिया में भुखमरी खत्म करना। लेकिन इस कार्यक्रम की शुरुआत के इतने साल बाद, आज भी दुनिया के करोड़ों लोगों को हम दो वक्त की रोटी मुहैया नहीं करवा पाए हैं।

□□

ब्रायलर मुर्गी पालन

-डॉ. नरेंद्र सिंह मीणा, डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. अंकित कुमार सिंह

ब्रायलर मुर्गीपालन करने से से पहले यह जानना जरूरी है कि ब्रायलर मुर्गीपालन पालन क्या है और कैसे करें? ब्रायलर मुर्गीपालन मांस के लिए किया जाता है। ब्रायलर प्रजाति के मुर्गा या मुर्गी अंडे से निकलने के बाद 40 से 50 ग्राम के होते हैं, जो सही प्रकार से दाना-दवा खिलाने और सही रख-रखाव के बाद 6 हफ्ते में लगभग 1.5 किलो से 2 किलो के हो जाते हैं। आज ब्रायलर फार्मिंग एक सुविकसित व्यवसाय के रूप में उभर चुका है। ब्रायलर मुर्गीपालन कम समय में अधिक से अधिक पैसे कमाने का व्यवसाय है। इसे छोटे किसान भी छोटे गाँव में कर सकते हैं बस उन्हें सही गाइड की आवश्यकता है।

आज भारत में ब्रायलर फार्मिंग एक सुविकसित व्यवसाय के रूप में उभर चुका है। ब्रायलर मुर्गी पालन कम समय में अधिक से अधिक पैसे कमाने का व्यवसाय है। इसे छोटे किसान भी छोटे गाँव में कर सकते हैं बस उन्हें सही गाइड की आवश्यकता है।

ब्रायलर मुर्गी पालन का तरीका

- फार्म के लिए जगह का चयन।
- जगह समतल हो और कुछ ऊंचाई पर हो, जिससे बारिश का पानी फार्म में जमा ना हो सके।
- मुख्य सड़क से ज्यादा दूर ना हो जिससे लोगों का और गाड़ी का आना जाना सही रूप से हो सके।
- बिजली और पानी की सुविधा सही रूप से उपलब्ध हो।
- चूजे, ब्रायलर दाना, दवाइयाँ, वैक्सीन आदि आसानी से उपलब्ध हों।
- ब्रायलर मुर्गी बेचने के लिए बाजार भी हो।

फार्म के लिए शेड का निर्माण

- शेड हमेशा पूर्व-पश्चिम दिशा में होना चाहिए और शेड के जाली वाला साइड उत्तर-दक्षिण में होना चाहिए, जिससे हवा सही रूप से शेड के अन्दर से बह सके और धूप अन्दर ज्यादा न लगे।
- शेड की चौड़ाई 30-35 फुट और लम्बाई जरुरत के अनुसार आप रख सकते हैं।
- शेड का फर्श पक्का होना चाहिए।
- शेड के दोनों ओर जाली वाले साइड में दीवार फर्श से मात्र 6 इंच ऊँची होनी चाहिए।
- शेड की छत को सीमेंट के एसबेस्टस या चादर से बनाना चाहिए और बीच-बीच में वेंटिलेशन के लिए जगह भी होना चाहिए। चादर को दोनों साइड 3 फीट कट लम्बा रखें, जिससे बारिश के बौछार ना जाये।
- शेड की साइड की ऊँचाई फर्श से 8-10 फुट होनी चाहिए व बीचों-बीच की ऊँचाई फर्श से 14-15 फुट होनी चाहिए।
- शेड के अन्दर बिजली के बल्ब, मुर्गीदाना व पानी के बर्तन, पानी की टंकी की उचित व्यवस्था होना चाहिए।
- एक शेड को दूसरे शेड से थोड़ा दूर-दूर बनायें। आप चाहें तो एक ही लम्बे शेड को बराबर भाग में दीवार बनाकर भी बाँट सकते हैं।

दाने और पानी के बर्तन

- प्रत्येक 100 चूजों के लिए कम से कम 3 पानी और 3 दाने के बर्तन होना बहुत ही आवश्यक है।
- दाने और पानी के बर्तन आप मैन्युअल या आटोमेटिक

किसी भी प्रकार का इस्तेमाल कर सकते हैं। मैन्युअल बर्तन साफ करने में आसान होते हैं, लेकिन पानी देने में थोड़ा कठिनाई होती है, पर आटोमेटिक वाले बर्तनों में पाइप सिस्टम होता है, जिससे टंकी का पानी सीधे पानी के बर्तन में भर जाता है।

बुरादा या लिटर

- बुरादा या लिटर के लिए आप लकड़ी का पाउडर, मूंगफली का छिल्का या धान का छिल्का का उपयोग कर सकते हैं।
- चूजे आने से पहले लिटर की 3-4 इंच मोटी परत फर्श पर बिछाना आवश्यक है। लिटर पूरा नया होना चाहिए एवं उसमें किसी भी प्रकार का संक्रमण ना हो।

ब्रूडिंग

- चूजों के सही प्रकार से विकास के लिए ब्रूडिंग सबसे ज्यादा आवश्यक है। ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार पूरी तरीके से ब्रूडिंग के ऊपर निर्भर करता है। अगर ब्रूडिंग में गलती हुई तो आपके चूजे 7-8 दिन में कमजोर हो कर मर जायेंगे या आपके सही दाना के इस्तेमाल करने पर भी उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा।
- जिस प्रकार मुर्गी अपने चूजों को कुछ-कुछ समय में अपने पंखों के नीचे रखकर गर्मी देती है, उसी प्रकार चूजों को फार्म में भी जरूरत के अनुसार तापमान देना पड़ता है।
- ब्रूडिंग कई प्रकार से किया जाता है-बिजली के बल्ब से, गैस ब्रूडर से या अंगीठी/सिगड़ी से।

ब्रायलर मुर्गी दाना से जुड़ी जानकारी

- ब्रायलर फार्मिंग में 3 प्रकार के दाना की आवश्यकता होती है। यह दाना ब्रायलर चूजों के उम्र और वजन के अनुसार दिया जाता है-
- प्रीस्टार्टर (0-10 दिन तक के चूजों के लिए)।
- स्टार्टर (11-20 दिन के ब्रायलर चूजों के लिए)।
- फिनिशर (21 दिन से मुर्गे के बिकने तक)।

पीने का पानी

- ब्रायलर मुर्गा 1 किलो दाना खाने पर 2-3 लीटर पानी पीता है। गर्मियों में पानी का पीना दो गुना हो जाता है। जितने सप्ताह का चूजा उसमें 2 का गुणा करने पर जो मात्रा आएगी, वह मात्रा पानी की प्रति 100 चूजों पर खपत होगी, जैसे-पहला सप्ताह=1X2=2 लीटर पानी/100 चूजा, दूसरा सप्ताह=2X2 = 4 लीटर पानी/100 चूजा।

ब्रायलर मुर्गियों के लिए जगह का हिसाब

- पहला सप्ताह–1 वर्गफुट/3 चूजे, दूसरा सप्ताह-1 वर्गफुट/2 चूजें एवं तीसरा सप्ताह से 1 किलो होने तक-1 वर्गफुट/1 चूजा 1 से 1.5 किलो ग्राम तक-1.25 वर्गफुट/1 चूजा 1.5 किलो ग्राम से बिकने तक 1.5 वर्गफुट/1 चूजा।
- सही प्रकार से चूजों को जगह मिलने पर चूजों का विकास अच्छा होता है और कई प्रकार की बीमारियों से भी उनका बचाव होता है।

ब्रायलर मुर्गियों के लिए लाइट या रोशनी का प्रबंध

- चूजों को 23 घंटे लाइट देना चाहिए और एक घंटे के लिए लाइट बंद करना चाहिए, ताकि चूजे अंधेरा होने पर भी ना डरें। पहले 2 सप्ताह रोशनी में कमी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इससे चूजे स्ट्रेस फ्री रहते हैं और दाना पानी अच्छे से खाते हैं। शेड के रोशनी को धीरे-धीरे कम करते जाना चाहिए।

सर्दियों के मौसम में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल कैसे करें?

- सर्दियों के महीने में चूजों की डिलीवरी सुबह के समय कराएँ, शाम या रात को बिलकुल नहीं, क्योंकि शाम के समय ठण्ड बढ़ती चली जाती है।
- शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले ही ढककर रखें।
- चूजों के आने के कम से कम 2-4 घंटे पहले ब्रूडर चला दें।
- पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें इससे पानी भी थोड़ा गर्म हो जायेगा।
- अगर ठण्ड ज्यादा हो तो ब्रूडर को कुछ समय के लिए हवा निरोधी भी आप बना सकते हैं किसी भी पोलिथीन से छोटे गोल शेड को ढककर।

गर्मियों के महीने में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल कैसे करें

- चूजों के फार्म पर पहुँचते ही इलेक्ट्रोलाइट पाउडर वाला पानी पिलायें। चूजों को 5-6 घंटे तक यही पानी पीने को दें।
- पानी के बर्तन उचित संख्या में लगायें-100 चूजों के लिए 3-4 बर्तन।
- 6-8 घंटे तक मात्र मक्के का दलिया दें।
- दिन के समय ब्रूडिंग ना करें।
- बुरादे में मोटाई 1.5-2 इंच रखें।
- शेड में वेंटिलेशन सही होना चाहिए। पर्दों को दिन-रात दोनों समय खुला रखें।
- संभव हो सके तो छत पर स्प्रिंकलर लगायें या भूसे के नाड़े छत पर बिछाएं।
- गर्मी से उत्पन्न होने वाले स्ट्रेस को कम करने के लिए विटामिन सी पानी में दें।
- मुर्गियां 1-1.5 किलो होते ही बिक्री शुरू कर दें।
- 750 ग्राम से ऊपर वाली मुर्गियों को सुबह 10 बजे से शाम के 5 बजे तक दाना न दें या फीडर को ऊपर उठा दें।
- Overcrowding ना करें, हो सके तो शेड की क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें।

बारिश के महीने में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल कैसे करें

- चूजों के फार्म पर पहुँचते ही इलेक्ट्रोलाइट पाउडर पोटेशियम परमैंगनेट वाला पानी पिलायें। चूजों को 5-6 घंटे तक यही पानी पीने को दें उसके बाद 6-8 घंटे मक्के का दलिया और उसके बाद प्रीस्टार्टर दें।
- मौसम के अनुसार ब्रूडर का उचित तापमान रखें।
- शेड में वेंटिलेशन सही होना चाहिए। पर्दों को दिन-रात दोनों समय खुला रखें अगर बारिश ज्यादा हो तो ढक दें।
- शेड के अन्दर पानी जमा होने ना दें।
- बुरादे की मोटाई 2-3 इंच रखें।
- बारिश के महीने में शेड के अन्दर आना-जाना कम करें।
- हमेशा स्वस्थ मुर्गियों का ही टीकाकरण करें और बीमार मुर्गियों को ठीक करने के लिए एंटीबायोटिक दें।

ब्रायलर चूजों के पालन की अन्य जानकारी

- चूजे आने के 7-8 दिन पहले ही शेड को अच्छे से साफ करें। सबसे पहले मकड़ी के जालों को अच्छे से हटा दें। उसके बाद ही नीचे की सफाई करें। उसके बाद फर्श को अच्छे से

धोएं और चुनें से पुताई करें।
- उसके बाद शेड के बाहर और अन्दर 3 प्रतिशत फोर्मलिन या किसी अच्छे कीटाणुनाशक का स्प्रे करें तथा दोनों जाली वाले साइड से परदों को ढक दें।
- चूजें आने के 1-2 दिन पहले फर्श पर 3-4 इंच तक बुरादे या लिटर की मोटी परत बिछाएं। लिटर पूरा नया और सुखा होना चाहिए।
- चूजे आने के 24 घंटे पहले टीन की चादर से गोलाकार घर बनायें, जिसका डाया-मीटर 3 मीटर होना चाहिए 250 चूजों के लिए।
- उस गोलाकार घर के अन्दर बुरादे के ऊपर अखबार या पेपर की दो परतें बिछाएं।
- चूजे आने के 24 घंटे पहले दोनों ओर के पर्दों को गिराकर शेड को पूरी तरह से बंद कर दें और शेड के अन्दर बल्ब या ब्रूडर को चालू कर दें, जिससे चूजों को आते ही सही तापमान (750F) मिले।
- साथ ही उसी समय पानी के बर्तनों में पानी भर के ब्रूडर के पास रखें। पानी में इलेक्ट्रोलाइट पाउडर एवं पोटेशियम क्लोराइड मिला कर दें।
- चूजों को जितना जल्दी हो सके चिक्स बॉक्स से निकालें। ज्यादा देर होने पर चूजों को निर्जलीकरण भी हो सकता है और चूजे मर भी सकते हैं। इसलिये चूजों को छोड़ने के बाद कुछ देर तक उन्हें पानी पीने के लिए दें।
- पानी पीने के बाद मक्के का दलिया पेपर के ऊपर डालें और दानें के बर्तन में भी मक्के का दलिया 6-8 घंटे तक खाने को दें। उसके बाद ही प्रीस्टार्टर खाने के लिए दें।
- सर्दियों के महीने में चूजों को फार्म पर सुबह या दोपहर के

समय डिलीवरी कराएँ, रात को कभी ना कराएँ।

- छोटे व कमजोर चूजों को अच्छे चूजों से अलग रखें और उनका दाना पानी भी अलग से उनकों दें। ऐसा इसलिए क्योंकि कमजोर चूजे जब अन्य चूजों के साथ खाना खाते हैं या पानी पीते हैं तो तंदुरुस्त चूजे कमजोर को कुचल देते हैं और वो मर जाते हैं। पर अगर आपको कुछ चूजों में किसी भी प्रकार की बीमारी का पता चलता है, तो उन्हें उसी समय दूसरे स्वस्थ चूजों से तुरंत दूर रखें।
- चूजों के सही रूप से विकास के लिए उचित दवाइयाँ और टीकाकरण करना बहुत ही आवश्यक है।
- गर्मी के मौसम में उत्पन्न तनाव व हीट स्ट्रेस को कम करने के लिए मल्टीविटामिन, विटामिन सी और Lysine की अधिक आवश्यकता होती है।

- शेड के अन्दर बुरादे या लिटर से Ammonia उत्पन्न होने से रोकने के लिए हर हफ्ते एक-दो बार लिटर में 1 किलोग्राम 20 वर्ग फुट चूना छिड़क कर बुरादा/लिटर को खोदकर उलट-पुलट करें। इससे लिटर सुखा रहता है और Ammonia उत्पन्न नहीं हो पाता।
- पानी को साफ करने के लिए प्रति 1000 लीटर पानी में 6 ग्राम ब्लीचिंग पाउडर और 1 ग्राम पोटैशियम पर मैंगनेट मिलाएं।
- टीकाकरण के 3 दिन पहले और 3 दिन बाद किसी भी प्रकार के एंटीबायोटिक का उपयोग ना करें। इससे वैक्सीन की शक्ति नष्ट हो जाती है। साथ ही 1 दिन पहले और 1 दिन बाद पानी में किसी भी प्रकार का सेनिटाइजर या ब्लीचिंग पाउडर ना मिलाएं।

ब्रायलर मुर्गी फार्म की बायोसिक्युरिटी से जुड़ी जानकारी

- ब्रायलर मुर्गी के दाना को साफ सूखे स्थान पर रखें क्योंकि यह खुला और पुराना हो जाने पर दाने में फफूंद लग जाती है, जो चूजों और मुर्गियों के स्वास्थ्य के लिए खराब होता है।
- बाहर के व्यक्तियों को फार्म तथा शेड के पास न जाने दें! इससे फार्म में बाहर से इन्फेक्शन आने का खतरा बढ़ता है।
- शेड के बाहर तथा अन्दर महीने में 3-4 बार चूने का छिड़काव करें।
- मुर्गी डीलर के गाड़ी को शेड से दूर रोकें। पास ले जाने पर दूसरे फार्म के इन्फेक्शन फार्म में आने का खतरा होता है।
- कुत्ते, बिल्ली, चूहे और बाहरी पक्षियों को फार्म के भीतर ना जाने दें।
- फार्म के शेड के अन्दर घुसने से पहले अपने रबर के जूतों को पहनें और पहनकर 3 प्रतिशत फोर्मलिन में डूबाकर अन्दर घुसें।
- एक शेड से दूसरे शेड में जाने से पहले अपने रबर के जूतों को दोबारा 3 प्रतिशत फोर्मलिन में दुबायें या प्रति शेड के लिए अलग-अलग जूतों का इस्तेमाल करें तथा हाथों को साबुन से अच्छे से धोएं।
- एक ही शेड में उसके क्षमता के अनुसार ही चूजे रखें Over crowding ना करें। इससे बीमारियाँ बढ़ती हैं और साफ सफाई में मुश्किल होती है।
- ब्रायलर मुर्गियों के बिक्री के बाद शेड के लिटर को शेड के पास ना फेकें उन्हें कहीं दूर बड़े गढ़े खुदवा कर गडा दें।

□□

स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

मकोय (सोलेनम नाइग्रम)

-रंजन कुमार राकेश

मकोय को काकमाची और भटकोइयां भी कहते हैं। मकोय द्विवर्षीय 30-90 से.मी. ऊंचा शाकीय पौधा होता है, जो भारतवर्ष के सभी छायायुक्त स्थानों में पाया जाता है। मकोय के पौधे में पूरे वर्ष फूल और फल दिखाई देते हैं। मकोय में शाखाओं पर उभरी हुई रेखाएं होती हैं। इसके पत्तों का रंग हरा व आकार में अंडाकार या आयताकार, 2-3 इंच लंबे व 1-1.5 इंच चौड़े होते हैं। इसके फूल छोटे व सफेद रंग के होते हैं। यह 3-8 के गुच्छों में व नीचे की ओर झुके हुए होते हैं। मकोय का फल छोटा, चिकना व गोलाकार होता है जो अपरिपक्व अवस्था में हरे रंग का तथा पकने पर नीले या बैंगनी रंग का होता है। मकोय के बीज छोटे, चिकने व रंग में पीले होते हैं यह बैंगन के बीजों की तरह होते हैं, परंतु आकार में बैंगन के बीजों से बहुत छोटे होते हैं।

इसके पुष्प दिसंबर व मई में आते हैं तथा फल पुष्पकाल के साथ साथ आते हैं।

भोगौलिक विवरण

मकोय भारत के शुष्क भागों में होता है। यह मुख्यतः आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक व तमिलनाडू में पाया जाता है।

जलवायु एवं मिट्टी

सामान्यतः यह पड़त भूमि में जहां नमीयुक्त वातावरण है इसके लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु वाला क्षेत्र उपयुक्त है। मकोय के लिए काली मृदा, लाल मृदा, तटीय मृदा आदि उपयुक्त होती है।

उपयोगी भाग

संपूर्ण पौधा।

कैसे करें खेती

रोपण विधि द्वारा पौधा उगाया जाता है। बीज को नर्सरी के रूप में अप्रैल-मई माह में अच्छी खाद वाली क्यारियों में उगाना चाहिए यह15-30 दिन पूर्णतया उगने में लेती है। अतः पौधा उगाने के 20-30 दिन बाद अच्छा तैयार हो जाता है व इसे अब मुख्य खेत में 60 से.मी.x60 से.मी. की दूरी पर स्थानांतरित

करना चाहिए।

जमीन की तैयारी

जमीन को अच्छी जुताई और खरपतवार से मुक्त करना चाहिए। मिट्टी तैयार करते समय प्रति हेक्टेयर 10 टन गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। बोने से पूर्व खेत में 2 से 3 बार हल चलाया जाने के बाद उस पर पाटा चलाया जाता है। इससे जमीन एक जैसी तथा भली प्रकार समतल हो जावे। सामान्यतः वर्षा के प्रारंभ (जून-जुलाई) में ही नर्सरी का स्थानांतरण मुख्य खेत में किया जाना चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी 60 से.मी.x60 से.मी. रखनी चाहिए।

सिंचाई विधि

साप्ताहिक अथवा मासिक रूप से सिंचाई करनी होती है। सिंचाई तब तक की जाती है जब तक कि पौधे में फूल नहीं निकलें।

रोग व कीट नियंत्रण

किसी भी गंभीर कीट व बीमारी का प्रकोप नहीं होता है।

फसल पकाना और कटाई

4-6 माह पश्चात् फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पौधों से पहले फल इकट्ठा कर लिए जाते हैं तत्पश्चात् संपूर्ण पौधे को जड़ सहित उखाड़ लेना चाहिए।

कटाई पश्चात् प्रबंधन

संपूर्ण पौधे को छाया में सूखा लिया जाता है। सूखाने के लिए

पौधों को उलटना पुलटना भी पड़ता है। बिल्कुल सूख जाने पर बोरे में भरकर ठंडे और हवादार भंडार गोदाम में रखा जाता है।

पैदावार

इसकी पैदावार भूमि, जलवायु, खाद व सिंचाई पर निर्भर करती है। जब फल पक जाए तो इसकी उपज लेना श्रेष्ठ रहता है। एक एकड़ से 1500 कि.ग्रा. पंचाग प्राप्त हो जाता है।

औषधीय उपयोग

- किडनी की बीमारी होने पर मकोय की सब्जी बनाकर 10-15 दिनों तक खाने से लाभ होता है।
- यह त्वचा रोग को ठीक करता है व जलन से राहत प्रदान करता है।

- आयुर्वेद के अनुसार यह पौधा गर्म होता है और शक्ति त्रिदोष को संतुलित करता है।
- नेत्र रोग व हृदय रोग के उपचार में उपयोगी है।
- यह यकृत शोथ, आमाशय शोथ आदि में विशेष काम आता है।
- शुक्राणु की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

- स्वर व गुणवत्ता में सुधार करता हैं
- शरीर में ताकत बढ़ाता है।

आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा अपने पशुस्वास्थ्य उत्पादों जैसे सुपरलीव-4, विलोसाइम जेड, एक्सलिवप्रो आदि में मकोय का उपयोग किया जाता है। □□

चिड़ाना में पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र

आयुर्वेट का आरंभ से उद्देश्य रहा है-किसान की आय को बढ़ाना। इसी लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के माध्यम से सोनीपत के गांव चिड़ाना में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशु पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र आरंभ किया गया है। इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां दी जाएगीः-

- औषधीय पौधों की गुणवत्ता जांच
- कृषि विधि एवं प्रशिक्षण
- औषधीय पौधों की खेती
- वृक्षारोपण सामग्री व उत्पाद
- जड़ी बूटियों की मार्केटिंग

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-0120-7100280

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम

बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन

स्वस्थ ब्यांत

बढ़िया पाचन प्रणाली

स्वस्थ अयन

एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

AYURVET™
आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान